मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग ३

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(तीसरा भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : २५-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रमणिका

१ दो शब्द ... ५-८

२ शाबर-मन्त्र ... ९-१५

[१ गणेश - विद्या के शाबर मन्त्र, गणपति के पाँच बाण ...९, २ इच्छित वस्तु-दायक 'दामोदर गणेश - मन्त्र'...१२, ३ डाकिनी बुलाने का मन्त्र...१२, ४ दुष्प्रयोग-निवारक मन्त्र...१२, ५ नजर उतारने के मन्त्र...१३, ६ भूत उतारने का भूतेश्वर मन्त्र...१३, ७ शाकिनी दोष दूर करने का मन्त्र...१३, ८ प्रतिमा चलाने का मन्त्र...१४, ९ अर्ध-कपाली (आधा सीसी पीड़ा) का मन्त्र...१४, १० बिच्छू उतारने का मन्त्र...१४, ११ रक्षा-मन्त्र ...१४, १२ सर्प भगाने का मन्त्र ...१५]

३ शाबर रुद्राक्ष-मन्त्र ... १५-१६

४ शाबर-शब्द-कोष ... १७-२५

५ शाबर-मन्त्र-मुक्तावलि ... २६-४२

[१ नारसिंह बीर...२७, २ भीमसेन...२८, ३ कलुआ...२८, ४ कलुआ...२८, ५ हनुमान... २९, ६ हनुमान...२९, ७ नीबू बीर...३०, ८ अजयपाल...३०, ९ कलुआ बीर...३०, १० दादू बीर...३०, ११ काली...३१, १२ काली...३१, १३ भैंसासुर...३१ १४ कलुआ बीर...३१, १५ काला बीर...३१, १६ विकट मन्त्र...३१, १७ भीलर...३२, १८ रकतिया बीर...३२, १९ कामाक्षा देवी... ३२, २० कामाख्या देवी... ३२, २१ कलुआ बीर...३३, २२ बिकट मन्त्र...३३, २३ बैहा नारसिङ्ग...३३, २४ लोना चमारिन...३३, २५ अल्लाह...३४, २६ आकर्षण...३४, २७ वशीकरण...३४, २८ अजाजील शैतान...३५, २९ वशीकरण के टोटके...३५, ३० लोना चमारिन...३५, ३१ करुआ बीर...३६, ३२ धूल...३६, ३३ धूल...३६, ३४ सरसों...३६, ३५ मिठाई...३७ ३६ काली-मन्त्र ...३७, ३७ विपरीत चालन...३७, ३८ झाड़नी...३७ ३९ विविध रोगों की झाड़नी...३८, ४० सूखी-मैली (स्त्री-रोग)...३८ ४१ शत्रु को डण्डा मारना...३८, ४२-४३ गिरता गर्भ रोकना...३९, ४४ मूठ लौटाना...३९, ४५ अपनी काया बाँधना और झाड़नी...४०,

४६ घर बाँधना···४०, ४७ जगह बाँधना ··४०, ४८ पेशाब चालू करना ·· ४०, ४९ कोख बाँधना···४१, ५० कुम्हार का आवा और कड़ाही, चूल्हा आदि बाँधना··· ४१, ५१ अग्नि - स्तम्भन···४१, ५२ मनुष्य-स्तम्भन···४१, ५३ निद्राकरण···४२ ।]

६ शाबर-मन्त्र-मुक्तावलि-शब्द-कोष ··· ४३-४४

७ गुरु गोरखनाथ के शाबर-मन्त्र ··· ४५-५१

[१ गोरख शाबर - गायत्री - मन्त्र···४६, २ टोना-दूरीकरण शाबर-मन्त्र···४६, ३ घाव पूरने का शाबर-मन्त्र····४७, ४ श्मशान-बाधा - निवारक शाबर - मन्त्र···४७, ५ कखलाई निवारक शाबर-मन्त्र···४८, ६ टिड्डी - रक्षक शाबर - मन्त्र···४८, ७ पशु - रोग-निवारक शाबर - मन्त्र···४८, ८ विभिन्न रोग - शामक शाबर-मन्त्र ४९, ९ पागल कुत्ते के काटे का शाबर-मन्त्र····४९, १० कामाख्या शाबर-मन्त्र·· ४९ ११ गर्भ-रक्षक शाबर मन्त्र···५०, १२ भूत-प्रेत-बाधा-नाशक शाबर-मन्त्र···५०, श्रीहनुमन्त पञ्जर···५१ ।]

८ विविध शाबर-मन्त्र ··· ५२-५९

[१ टोना-टमारी, बच्चों की बीमारी तथा साँप झारने के मन्त्र, २ सिर-पीड़ा झारने का मन्त्र, ३ हनुमान रक्षा-शाबर-मन्त्र ५२, ४ दो बाल - रक्षा मन्त्र, ५ अन्नपूरना देवी का सिद्ध मन्त्र···५३, ६ माहेश्वर धूप, ७ सर्व - कामना - पूरण मन्त्र, ८ बाबा नीलकण्ठ (मैहर) का विधान ··५४, ९ कार्य-सिद्धि हेतु शाबर-मन्त्र, १० शारदा माता का मन्त्र, ११ हर प्रकार के सङ्कट का बन्धन-कारक मन्त्र ५५, १२ भूत-प्रेत-निवारक कामरूप का जादू, १३ मुद्राकर्षण शाबर-मन्त्र, १४ विवाहार्थ शाबर - मन्त्र···५६, १५ डाइन भगाने का मन्त्र, १६ भूत - प्रेत - शैतान भगाने का मन्त्र, १७ नजर झारने का मन्त्र, १८ पसली चलने बच्चों के रोने का मन्त्र, १९ बतास झारने का मन्त्र ··५७, २० बिच्छू झारने का मन्त्र, २१ वायु - गोला झारने का मन्त्र, २२ कुत्ता झारने का मन्त्र···५८, मन्त्र-सिद्धि करने की विधि···५९ ।]

९ हनुमान जी का शाबर-मन्त्र ··· ५९

(भौतिक पर-कृत प्रयोग बाधा, नजरादि दूर करने के लिए)

१० उपयोगी शाबर-मन्त्र ··· ६०-६४

दो शब्द

'शाबर मन्त्र' सारे देश में अति प्राचीन काल से प्रचलित रहे हैं, किन्तु न तो इनके विधिवत् संग्रह का प्रयास कभी किसी संस्थान द्वारा किया गया और न ही इन पर समुचित शोध करने के प्रति किसी ने ध्यान ही दिया। पहले-पहल **'कल्याण मन्दिर प्रकाशन'** ने इस ओर प्रयास किया और **'कौल - कल्पतरु चण्डी'** के विशेषाङ्कों के रूप में प्रस्तुत **'संग्रह'** का पहला भाग १६ मार्च, १९९१ को तथा दूसरा भाग १५ जनवरी, १९९२ को प्रकाशित हुआ। तीसरा भाग अब प्रकाशित हो रहा है। इन तीनों भागों में **'शाबर मन्त्र'**-विषयक जो सामग्री प्रकाशित हुई है, उस पर एक विहङ्गम दृष्टि डालने से पता चलता है कि लोक-प्रिय **'शाबर'** मन्त्र इधर-उधर पूरे भारत में कितने बिखरे हुए हैं। देश के कोने-कोने से उदार - मना साधक-बन्धु अपने अनुभूत एवं संग्रहीत शाबर मन्त्रों को प्रकाशनार्थ भेजते ही जा रहे हैं। साथ ही, उपयोगी सुझाव भी देते जा रहे हैं। मन्त्र-विद्या के सभी प्रेमी पाठक **'एक-मत'** से यह चाहते हैं कि इन **'शाबर'** मन्त्रों को **'शुद्ध एवं विधि के साथ सम्पादित कर प्रकाशित किया जाय।'**

उक्त **'चाह'** की पूर्ति करने के लिए साधकों के पास बिखरे हुए **'शाबर-मन्त्रों'** का प्रकाशन आवश्यक है। साथ ही देश के विविध संग्रहालयों में **'शाबर-मन्त्र'** सम्बन्धी जो पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं, उन्हें प्राप्त कर प्रकाश में लाना होगा। साथ ही, उपलब्ध तन्त्र-साहित्य में जहाँ-जहाँ **'शाबर-मन्त्र'** विषयक निर्देश मिलते हैं, उन सबको भी एकत्र कर प्रकाशित करना होगा। इस समस्त सामग्री के आधार पर ही **'शाबर'** मन्त्रों पर प्रामाणिक रूप से समीक्षा की जा सकती है। उदाहरण के लिए ध्यान दें--

'पुरश्चर्यार्णव' के पृष्ठ ६११ पर **'मेरु-तन्त्र'** के निम्न वचन उद्धृत हैं, जिनसे **'शाबर-मन्त्र'** के पुरश्चरण की विधि ज्ञात होती है--

अथ शाबर - मन्त्राणां, पुरश्चरणमुच्यते --
काम - रूपाख्य-देशे तु, कामाख्या यत्र देवता।
काम-शैलोऽस्ति यत्रासौ, काम - पीठं तदुच्यते॥
तत्र संलेख्य मन्त्रं हि, वंशोपरि यथा - क्रमम्।
गुरूणां वाचनीयः स, स्वयं पश्चात् पठेन्मनुम्॥

गुरोरभावे तस्यैव, मूले शैलस्य पर्वणि ।
लिखित्वा प्रपठेन्मन्त्रं, काम - पीठं गुरुर्मतः ।।
अथवा योगिनी-शैले, दक्षिणस्यां दिशि ध्रुवम् ।
योगाम्बा यत्र देवी सा, लिखित्वा प्रपठेन्मनुम् ।।
ज्वालामुखी समीपे वा, हिंगुलायाः समीपतः ।
लिखित्वा प्रपठेन्मन्त्रं, नान्यथैव प्रसिद्धयति ।।
मुख्यतः स्त्री-समीपे हि, काम-पीठे मनु - ग्रहः ।
अथवा सर्व - देशेषु, मन्त्र-ग्रहणमुच्यते ।।
ताल-पत्रे मनुं वक्ष्ये, पूर्ण - कुम्भे निधापयेत् ।
भास्करं च गुरुं ध्यात्वा, वाचयेत् त्रिगुरू रविः ।।

एतावता शाबर-मन्त्राणां विधि-वद् ग्रहणमेव पुरश्चरणमित्युक्तम् ।

इसी प्रकार 'आगम-रहस्य', उत्तरार्द्ध के पृष्ठ ३६१ पर देखें–

अथ शाबर-मन्त्राणां, जागर्ति शृणु पार्वति !
कांस्य-भाजनमानीय, शुद्धं भस्मादिभिः कृतम् ।
प्रजपेद् रवि-रात्रौ तु, यामे यामे शताष्टकम् ।।
खादिर्या ताडयेद् यष्ट्या, कांस्य-पात्रं वदेदिति ।
जाग्रतो भव मन्त्रस्य, भाषयाऽद्य तुरीयके ।।
यामे दद्याद् बलिं काल्या, मन्त्रजं भैरवस्य तु ।
कुक्कुटं चान्य - देवेषु, स्फोटयेन्नारिकेलकम् ।।

मन्त्रस्य भाषयेति । यद् देशीय - भाषात्मकः शाबर - मन्त्रस्तद्-देशीय-भाषयैव मन्त्रं सम्बोध्य 'त्वं जाग्रतं भव' इति वदेदित्यर्थः ।

उक्त 'वचन' कितने महत्त्व-पूर्ण हैं, यह विज्ञ पाठकों को बताने की आवश्यकता नहीं है । ऐसे ही उपयोगी उद्धरण अन्य उपलब्ध 'तन्त्र-साहित्य' में मिल सकते हैं । इन सबको एकत्र करना सरल कार्य नहीं है । तथापि इस कठिन कार्य को करना ही होगा क्योंकि 'चण्डी-कार्यालय' की ऐसी ही ख्याति रही है ।

'गुजरात' से श्री भारद्वाज जयराम भाई लक्ष्मण भाई ने प्रस्तुत 'शाबर मन्त्र-संग्रह' के सम्बन्ध में 'दो शब्द' लिख भेजने की कृपा की है, जिनसे उक्त कथन की पुष्टि होती है । वे यहाँ उद्धृत हैं–

"भारत आध्यात्मिक देश है । यहाँ की जनता-जनार्दन देवेश्वर-आराधना उपासना मन्त्रानुष्ठान आदि में अपार श्रद्धा रखती है । यही

नहीं, अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए वह तत्परता के साथ मन्त्र, योग, देव-स्थान, ज्योतिष आदि सभी का सहारा लिया करती है। बहुत से भारतीय तो स्वयं कुछ करने की उत्कट इच्छा से बाध्य होकर पुस्तक में पढ़ कर ही मन्त्र सिद्ध करने का प्रयत्न करते दिखाई देते हैं। इसी से आज-कल मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र की पुस्तकों का प्रकाशन दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है, किन्तु यह बड़े दुःख की बात है कि इन पुस्तकों से विधि-विधान पूर्ण रूप से मालूम नहीं होता। मन्त्र भी प्रायः अशुद्ध छपे होते हैं।

मन्त्र-विद्या का भी व्यापारीकरण हो जाने से लोभी प्रकाशक पूरी जाँच किए बिना ही पुस्तकों पर पुस्तकें छापते जा रहे हैं। ऊपर से प्रपञ्च यह चला है कि इन पुस्तकों में मन्त्र-वक्ताओं के नाम कृत्रिम या अस्पष्ट होते हैं। यथा—**बाबा, नाथ, सिद्ध योगी, प्रोफेसर** आदि। इन मन्त्रादि-लेखकों के पूरे पते भी नहीं छापे जाते कि कहीं कोई पाठक पत्र - व्यवहार न करे और भण्डाफोड़ हो जाय। यह सब असत्य को छिपाने की लीला ही है। पाठकों को चक्कर में डालने के लिए एक ही मन्त्र पृथक्-पृथक् लेखकों के नाम से उद्धृत किया जाता है और एक लिखता है कि '**२१ बार जपे**', तो दूसरा लिखता है कि '**११ बार जपे**' और तीसरा '**५० बार जपने**' का निर्देश करता है। यन्त्र-लेखन में भी एक लिखता है कि "अष्ट - गन्ध में '**गङ्गा-जल**' डालना", तो दूसरा बताता है—'**बहती नदी का जल**', तो तीसरा और कुछ निर्देश देता है! 'तन्त्र' के सम्बन्ध में भी ऐसा ही गोरख-धन्धा है!

उदाहरण के लिए आज '**गोरख तन्त्र**', '**दत्तात्रेय तन्त्र**' और '**भैरव तन्त्र**' जैसे नामोंवाली पुस्तकें खरीद कर देखें, तो सबमें प्रायः एक ही '**मन्त्र**' और '**तन्त्र**' पढ़ने को मिलेगा। केवल विधि में मामूली परिवर्तन—हेर - फेर होगा। ऐसी परिस्थिति में सही और अनुभूत पूर्ण विधि-विधान का ज्ञान कैसे हो?

मेरी समझ से इस प्रश्न का उत्तर एक ही दिया जा सकता है और वह उत्तर यह है कि '**विशुद्ध मन्त्रों, मात्रा की भी गलती न हो—ऐसे स्तोत्रादि और देवताओं से सम्बन्ध स्थापित हो सके—ऐसी साधना पाठकों को मात्र 'चण्डी' पत्रिका एवं कौल - कल्पतरु' की पुस्तकों में ही सुलभ हैं। किसी जगह अशुद्धि मिलेगी नहीं क्योंकि वह 'व्यापारी'**

नहीं हैं, अपितु सत्य को उजागर करनेवाले, अग्नि की राख को फूंक-झाड़कर अग्नि को प्रगट करनेवाले, लोक-हित का उद्देश्य रखनेवाले और शक्ति - ब्रह्म के ज्ञाता गुरुओं की पहचान करानेवाले जागृत 'सम्पादक' के प्रकाशन हैं।

उक्त विशेषताओं के अतिरिक्त एक तथ्य यह भी उल्लेख्य है कि मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रादि के सिद्ध साधक सहर्ष एक-मात्र 'चण्डी' में ही अपने अनुभूत प्रयोगादि निबन्ध-रूप में प्रकाशनार्थ देते हैं और **'चण्डी'** उन सबको बिना किसी हिचकिचाहट के ज्यों-का-त्यों प्रकट करती है। इसी सच्ची साधना के फल - स्वरूप **'चण्डी'** को **'स्वर्ण - जयन्ती'** मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।"

'कौल-कल्पतरु चण्डी' की उक्त कीर्ति के अनुरूप ही प्रस्तुत संग्रह को **'सर्व-मान्य'** बनाने का प्रयास करना है। इसके लिए **'संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी'** के संग्रहालय से जो पाण्डुलिपियाँ **'चण्डी-कार्यालय'** द्वारा मँगाई जा चुकी हैं, उनका प्रकाशन आवश्यक है। साथ ही, जो अन्य सामग्री अभी उदार-मना साधकों से मिलती जा रही है, उसे भी प्रकाश में लाना उपयोगी होगा। तभी 'शाबर' मन्त्रों के सम्बन्ध में समुचित समीक्षा कर पाना सम्भव होगा।

अब तक प्रकाशित **'शाबर मन्त्र-संग्रह'** सर्व - साधारण के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। पूज्य गुरु-जनों की सहायता से कितने ही प्रकाशित **'शाबर'** मन्त्रों का प्रयोग कर कितने ही दुःखी जन लाभान्वित भी हुए हैं और हो रहे हैं, किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि **'किन्हीं अनुभवी परोपकारी मार्ग-दर्शक साधक से अनुमति लेकर ही किसी मन्त्र का प्रयोग करना उचित है। पुस्तक में प्रकाशित मन्त्र को पढ़कर केवल पुस्तक के सहारे ही किसी भी मन्त्र का प्रयोग करना उचित नहीं है।'**

'शाबर मन्त्र-संग्रह' के चौथे भाग में प्रस्तुत **'तीन भागों की विस्तृत समीक्षा'** के साथ 'शाबर'-मन्त्र विषयक अन्य उपलब्ध सामग्री का प्रकाशन किया जायगा।

– ऋतशील शर्मा

श्रावण पूर्णिमा, २०४६ वि०

शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जे० एल० भारद्वाज, श्रीचामुण्डा ज्योतिष केन्द्र
१६० ए, नेमीनाथनगर, **राणीप, अहमदाबाद** (गुजरात)

'शाबर मन्त्र' प्रायः प्रादेशिक भाषा में ही नहीं, अपितु देहाती भाषा में, आदि-वासी भाषाओं तक में मिलते हैं। इन मन्त्रों के सम्बन्ध में कोई व्यवस्थित शास्त्र नहीं है। इन्हें गुरु-मुख से ही सीखा जाता है। 'शाबर-मन्त्रों' के रचयिता स्वयं भगवान् शिव माने गए हैं। गोस्वामी तुलसीदास की उक्ति प्रसिद्ध है, जो इस बात का समर्थन करती है। तथापि शोध से ज्ञात होता है कि–

'शाबर' मन्त्रों के रचयिता मुख्यतः **'नाथ-सम्प्रदाय'** के सिद्ध पुरुष रहे हैं। ये सिद्ध पुरुष अधिकतर ग्रामीण एवं वन-वासी लोगों के सम्पर्क में रहते थे। फलतः ये मन्त्र **'सधुक्कड़ी भाषा'** में ही पाए जाते हैं। इन सिद्ध पुरुषों में गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ आदि प्रमुख-मन्त्र प्रणेता रहे। कालान्तर में मत्स्येन्द्रनाथ ही **'मच्छेन्द्रनाथ'** नाम से प्रसिद्ध हुए। कहते हैं कि–उन्हीं को इस्लामी भाषा में **'इस्माईल योगी'** कहा गया। 'मेनाकिनी त्रिपा रानी' को **'कामाख्या रानी'** नाम से सम्बोधित किया जाता है। गोरखनाथ को **'गोरक्षनाथ'** भी कहते हैं। गृहस्थ नारियों ने भी 'शाबर-मन्त्रों' की रचना में योगदान किया। इसी से **गांगी, तैली, हाड़ी रानी, लोना चमारिन, रत्ना धोबिन, कामाख्या रानी** आदि की दोहाई 'शाबर' मन्त्रों में देखने को मिलती है।

'शाबर' मन्त्रों में सर्व-प्रथम तो **'आत्म-विश्वास'** की आवश्यकता होती है। दूसरा महत्त्व गुरु का सर्व-मान्य है। **'गुरू की भक्ति'** ही प्रभावी शक्ति प्रदान करती है। साथ ही **'तत्त्व-ज्ञान'** का भी समावेश है। मन्त्रों की समाप्ति पर **मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा**'––ये पद **'तत्त्व-ज्ञान'** के ही बोधक हैं। 'वाणी' या 'वाचा' ईश्वरी इच्छा से स्फुरित होती है, जो जीवन्त है। साथ ही मन में दृढ़ विश्वास हो कि यह कार्य अवश्य होगा ही। नाथ लोग कहते हैं कि **"शब्द साचा, सर्व-वशे महेश।"** यही **'शाबर'** - मन्त्रों का अडिग सूत्र है।

'शाबर' मन्त्रों में कभी-कभी कोई अर्थ घटित नहीं होते। फिर भी मन्त्र प्रभावी बहुत होते हैं। शब्दों का तारतम्य भी नहीं होता, किन्हीं मन्त्रों में अर्थ का उलट - पलट भी देखने में आता है। इन मन्त्रों को कोई-कोई शास्त्री पण्डित अशुद्ध समझकर, ह्रस्व-दीर्घ आदि में शुद्धता लाने की इच्छा से फेर-फार करके कार्य में लेते हैं, परन्तु ऐसा करने से मन्त्र फल-दायक नहीं होता।

उदाहरण के लिए जब किसी को बिच्छू ने डङ्क मार दिया हो, तो उसका विष उतारनेवाला रोगी को देखकर बोलता है--'**धाय बिसा देर**।' ऐसा वह तीन बार बोलता है और बिच्छू उतर जाता है। बाद में थोड़ी विभूति लेकर डङ्क पर लगा दिया। बस, हो गया काम! इस मन्त्र में न तो बिच्छ का, या विष का उल्लेख है, न देव-देवी का नाम है। दुहाई आदि कुछ भी नहीं है, परन्तु बिच्छू का विष तुरन्त उतर जाता है!

चालीस साल पूर्व एक मुसलमान जागीरदार साँप का विष उतारने के लिए प्रसिद्ध थे, नाम था फरीद खोखर। जूनागढ़ के नवाब बाबी-कुटुम्ब के थे।

किसी को साँप ने काटा हो और उसके पास कोई मनुष्य या बैल, कुत्ता आदि पशु -जो भी दिखाई दे, उससे अथवा यदि इनमें से कोई प्राणी न दिखे, तो किसी वृक्ष के सामने जाकर उससे कहे—

'**फरीद खोखर बापू! मुझे सांप काटा है।**'

उक्त प्रकार नाम लेकर फरियाद करने से ही साँप का बिष उतर जाता है। बाद में रोगी स्वयं जाकर या पत्र द्वारा 'बापू' को सन्देश पहुँचा दे कि अमुक व्यक्ति को साँप ने काट लिया था। कैसा सरल उपाय है!

'**शाबर मन्त्रों**' की ऐसी ही महिमा रही है। इन सब मन्त्रों को संगृहीत कर पुस्तक-रूप में प्रकाशित करने की बड़ी आवश्यकता थी। यह बड़े सन्तोष की बात है कि इस महत् कार्य को प्रयाग (उ. प्र.) के '**चण्डी-कार्यालय**' द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है। मेरे पास जो अनुभूत '**शाबर मन्त्र**' हैं, उन्हें लिखकर भेज रहा हूँ, जिससे '**शाबर-मन्त्र-संग्रह**' के अन्तर्गत वे भी सुरक्षित हो जाएँ और श्रद्धालु लोगों के काम आएँ।

●●

गणेश-विद्या के शाबर मन्त्र

गणपति के पांच बाण

(१) ॐ गुरु जी समरूं, गुणपति साधूं, लाण डाकण मारूं। चार सोकोत्तरे पांए लगाडूं। गुण-पति राजा घोड़े चडोया, मूत-पलीत में विघन हमेशा होंकारा। पीछा फरे, तो माई पावंती जी का दूध हराम करे।

(२) ॐ गुरु जी गुणेश बोले भोले ! सवा सेर लाडूं खावे। होंकारा सो कोस जावे। हमेश होंकारा। पीछा फरे, तो माई पार्वती जी का दूध हराम करे।

(३) ॐ गुरु जी, बोडोया वीर ! तूं बलीयो वीर। जब लग तारी सेवा करूं, लीला थई शिर धरूं। माथे मांडु पलाण, गसाण मांथी मुठी करूं। कहोने सन्तो राम-राम।

(४) ॐ गुरु जी ! तम गणेश-गौरी का पूत। ज्यां समरूं त्यां आयो जोत। तमारा पिता जी ईश्वर महादेव, साची तमारी सेवा करूं। हमेश कामे पधारो और लाडू, सींदुरनी पड़ी, लवींग, सोपारी पान-बीडूं श्री गुणपतिना उर मां धरूं।

(५) ॐ गुरु जी ! सोधबाई से चला आय, राजा-प्रजा लागे पाई। वाटे-घाटे न मारी ओजवाई। ज्यां समरूं, त्यां आगेवान।

विधि--गणेश-चतुर्थी के दिन लाल लँगोट पहनकर, गणपति की मूर्ति को अपने सामने लाल कपड़े पर अक्षत और दूर्वा के ऊपर रखे। फिर दूध, दही, जल से क्रमशः स्नान कराए। स्नान करते समय—'**ॐ गुरु जी गं गणपतये नमः**', '**ह्रीं गं गणपतये नमः**' यही मन्त्र पढ़ता रहे। स्नान के बाद सिन्दूर लगाए, लाल पुष्प चढ़ाए। चूरमे के लड्डू का नैवेद्य और लौंग, सुपारी, पान का बीड़ा और दक्षिणा (रुपए-पैसे) सम्मुख रखे। गुग्गुल की धूप देकर, आरती करे। इसके बाद उक्त '**पञ्च-बाण-मन्त्रों**' का जप करे–पाँच माला। जप पूरा होने पर प्रसाद के लड्डू का भोजन करे। जो शेष बचे, उसे भूमि में गाड़ दे। आसन के ऊपर का अक्षत सँभाल कर रख ले। इच्छित कार्य में लाते समय गुग्गुल की धूप देकर '**पाँच-बाण-मन्त्रों**' को पाँच बार बोलकर अक्षत में कार्य का चिन्तन करे। इससे इच्छित कार्य पूर्ण होगा।

यह प्रयोग नाथ-पन्थी दीपकनाथ जी मालिया के सौजन्य से प्राचीन हस्त-लिखित पाण्डुलिपि से प्राप्त हुआ है।

२ इच्छित वस्तु-दायक 'दामोदर गणेश-मन्त्र'

ॐ नमो दामोदर गणेश, जनक मवडी पगे पावडी। बांएं हाथे फरशी, दाएं हाथे अँगीठी। अरथ लाओ, गरथ लाओ। आसन बेठा जोगी लाओ, हमारी मँगावी वस्तु लाओ। न लाओ, तो माता पार्वती की दुवाई फिरे। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। सत्य गुरु का मन्त्र साँचा।

विधि—अङ्गारक-चतुर्थी (मङ्गलवार चतुर्थी) के दिन यह प्रयोग करे। चार मङ्गलवार करना चाहिए। गणेश की मूर्ति को पञ्चामृत से स्नान कराकर, पूजन कर, उक्त मन्त्र की २१ माला जप करे। तब मन्त्र सिद्ध होगा। सिद्ध मन्त्र द्वारा इच्छित वस्तु प्राप्त हो जायगी।

३ डाकिनी बुलाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को, ॐ नमो जय नरसिंह। तीन लोक चौदह भुवन में हाथ चाबी होय। चाबी नयन लाल-लाल। सर्व बैरी पछाड़ मार। भगतन को परख राख। आदेश आदि पुरुष को।

विधि—जिसे डाकिनी लगी हो, उसे पवित्र होकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाए। तब पूछने से वह उतर देगी।

४ दुष्प्रयोग-निवारक मन्त्र

किसी व्यक्ति पर यदि मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रादि का दुःखद प्रभाव हो, तो उसे दूर करने का शाबर-मन्त्र—

उलटन-पलटन पछम काया, किनी बेटे ईस पानकु किया। जिसकु किया, जिसकी विद्या उस पर गया।

विधि चौराहे पर जाकर एक ठीकरी में बताशा रखकर, उसके ऊपर थोड़ा शहद डाले और उक्त मन्त्र पढ़े। फिर सात कङ्कड़ लेकर एक-एक बार मन्त्र का उच्चारण कर क्रमशः चार कङ्कड़ चारों दिशाओं में फेंक दे। तीन कङ्कड़ घर लावे। घर आते समय पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। फिर कङ्कड़ पर उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को मारे। इससे मन्त्र-तन्त्र का प्रभाव दूर हो जाएगा।

५ नजर उतारने के मन्त्र

(१) ॐ नमो आदेश । तू ज्या नावे, भूत पले, प्रेत पले । खबीस पले, अरिष्ट पले--सब पले । न पले, तर गुरु की, गोरखनाथ की, बीद यांहीं चले । गुरु सङ्गत, मेरी भगत, चले मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

विधि--उक्त मन्त्र से सात बार 'राख' को अभिमन्त्रित कर उससे रोगी के कपाल पर टीका लगा दे । नजर उतर जाएगी ।

(२) ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय, ह्रीं धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय । आत्म-चक्षु, प्रेत-चक्षु, पिशाच-चक्षु--सर्व-नाशाय, सर्व-ज्वर-नाशाय नाशाय, त्रायस त्रायस, ह्रीं नाथाय स्वाहा ।

विधि--उक्त जैन-मन्त्र को सात बार पढ़कर बालक को जल पिला दे । सर्व प्रकार की नजर उतर जाएगी ।

६ भूत उतारने का भूतेश्वर मन्त्र

(महा-वैद्य महर्षि हारीत-कृत)

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय, कलि-कलि-नखाय, रौद्र-दंष्ट्र-कराल वक्त्राय, त्रिनयन, धन धनि तपि-शण्डन, ललाट-नेत्राय, तीव्र-कोपानलामित-तेजसे, पाश-शूल-खट्वाङ्ग-डमरुक-धनुर्बाण-मुद्गराभय-दण्ड-त्रास-मुद्रा-व्ययद-संयदाद्र-दण्ड-मण्डिताय, कपिल-जटा-जूटार्ध - चन्द्र-धारिणे, भस्म-राग-रञ्जित-विग्रहाय, उग्र फण काल-कूटाटोप-मण्डित-कण्ठ-देशाय, जय जय भूतनाथामरात्मने । रूप दर्शय दर्शय, नृत्य नृत्य, चल चल, पाशेन बन्ध बन्ध, हुङ्कारेण त्रासय त्रासय, वज्र-दण्डेन हन हन, निशित-खड्गेन छिन्न छिन्न, शूलाग्रेण भिन्न भिन्न, मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय, सर्व-ग्रहाणामावेशय वेशय स्वाहा ।

विधि--गुग्गुल, घी, शहद का धूप देकर, मन्त्र पढ़कर पीड़ित को डर बताना (धमकाना) ।

७ शाकिनो-दोष दूर करने के मन्त्र

(१) ॐ ह्रीं षः सः हः यः वः स्वी स्वाहा ।

विधि--उक्त मन्त्र से गुग्गुल को १०८ बार अभिमन्त्रित कर, जिसे शाकिनी लगी हो, उसके ललाट पर वही गुग्गुल घिसे, तो शाकिनी उसे छोड़कर चली जाएगी ।

(२) **ओम् ह्लों ग्रां हुं फट् स्वाहा ।**

विधि--गुग्गुल की १०८ आहुतियाँ देकर होम करे। इससे शाकिनी चली जाएगी ।

८ प्रतिमा चलाने का मन्त्र

ॐ ह्रि ह्रीं, ह्रं ह्रूं, ह्रें ह्रैं, ह्रों ह्रौं, ह्रं ह्रः अप्रतिहत-चक्रेश्वरी ! प्रतिमा चालय चालय, शुभाशुभ-निमित्तस्य प्रकाशय प्रकाशय स्वाहा ।

विधि--दस-बारह साल की कन्या को स्नान कराकर, बैठाकर उसके दोनों हाथों की अञ्जुली में गणेश या किसी देवता की मूर्ति रख दे। फिर १०८ अक्षत लेकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इसके बाद मन्त्र का उच्चारण करते हुए मूर्ति पर चावल डालता जाय, तो मूर्ति चलेगी। साथ ही उक्त कन्या भी बैठी बैठी खिसकती जाएगी। भविष्य जानने के लिए या किसी असाध्य प्रश्न का उत्तर पाने के लिए या सत्यासत्य जानने के लिए यह प्रयोग कर सकते हैं।

९ अर्ध-कपाली (आधा सीसी पीड़ा) का मन्त्र

ॐ नमो त्रिखण्ड कपाली । मणी माहि-माहि, पवन-पवन माहि । सीचक चडी, वेगी न जाई, तु महादेव की पूजा पाँय ठेली । ॐ नमो कुमार चमार हाडनी, आधोशी न उतरी, तु सूर्यनी आण ।

विधि--रोगी को सामने बिठाकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए लोहे की छुरी से जमीन पर रेखा खींचे। इससे सिर में होनेवाली आधा शीशी पीड़ा दूर हो जाएगी।

१० बिच्छू उतारने का मन्त्र

धाय विसा देर ।

विधि--रोगी के सामने उक्त मन्त्र जोर से बोले और रोगी से जमीन पर हाथ या पैर पटकने को कहे। ऐसा ३ बार करने से बिच्छू का विष उतर जाएगा।

११ रक्षा-मन्त्र

ॱमो आदेश गुरू का। लोना चमारी, गगन की वीजुरी। ॱक, इस पिण्ड में जया न करे। विजया न करे, तो उस

रण्डी के ऊपर परै। दुहाई तखत सुलेमान पैगम्बर की फिरे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि--जब कहीं भी जाना हो, उक्त मन्त्र २१ बार जप कर ले। इससे भूत - प्रेत, खबीस आदि ऊपरी कोई बाधा पास नहीं आएगी।

(२) **ॐ नमो आदेश गुरू को। दे हनमन्त वीर, वीरन के वीर ! तिहारे तरकस, नौ लाख तीर। छिन वामे, छिन दाहिने, कबहुं आगे होई। धनी गुसाईं सेवतां, काया भङ्ग न होई। इन्द्रासन दो लोक में, बाहर देखे मसाण। हमारी देही का छल-छिद्र व्यापै, तो जती हनमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाच।**

विधि--उक्त मन्त्र का पाठ करते-करते कहीं भी जाए, किसी प्रकार का भय नहीं लगेगा।

१२ सर्प भगाने का मन्त्र

घी की धूप देकर '**ॐ सर्पाय नमः**' कहकर सर्प के सामने फूंक मारे। ऐसा सात बार करने से साँप चला जायगा।

शाबर रुद्राक्ष-मन्त्र

परम पूज्य स्वामी हिमालय अरण्य जी

सत् नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ! मुखे ब्रह्मा, मध्ये विष्णु, लिङ्ग नाम महेश्वर। सर्व - देव-नमस्कारं। रुद्राक्षाय नमो नमः। गगन - मण्डल में धुन्धुकार, पाताल निरञ्जन निराकार।

निराकार में चर्ण पादुका, चर्ण-पादुका में पिण्डी, पिण्डी में वासुक, वासुक में कामुक, कामुक में कूर्म, कूर्म में मरी, मरी में नाग-फनि—

अलख पुरुष ने बैल के सींङ्ग पर राई ठहराई। धोराज धर्म की धूनी जमाई--वहाँ पर रुद्राक्ष सुमेर पर्वत पर जमाइए। उसमें से फूट छ डाली। एक गया पूर्व, एक गया दक्षिण, एक गया पश्चिम, एक गया उत्तर, एक गया आकाश, एक गया पाताल।

उसमें लाग्या 'एक-मुखी' रुद्राक्ष, श्री रुद्र पर चढ़ाइए, श्री ॐकार आदिनाथ जो को। 'दो-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए चन्द्र-सूर्य को। 'तीन-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए तीन लोकों को। 'चतुर्मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए चार वेदों को। 'पाँच-मुखी' रुद्राक्ष पाँच पाण्डवों को। 'छः-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए षट् - दशन को। 'सात - मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए सप्त-समुद्र को।

'अष्ट-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए अष्ट-कुली नागों को। 'नव-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए नव-नाथों को। 'दश-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए दश अवतारों को। 'ग्यारह-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए ग्यारह रुद्रों को। 'द्वादश-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए बारह-पन्थ (सूर्य) को। 'तेरह-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए तेंतीस कोटि देवी-देवताओं को। 'चौदह-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए चौद-भुवन (रतन) को।

'पन्द्रह-मुखी' रुद्राक्ष पन्द्रह तिथियों को। 'सोलह-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए सोलह शृङ्गार को। 'सतरह-मुखी' चढ़ाइए श्री सीता माता को। 'अठारह - मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए अठारह भार वनस्पति को (अठारह पुराण)। 'उन्नीस-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए अलख पुरुष को। 'बीस-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए विष्णु भगवान् को। 'इक्कीस-मुखी' रुद्राक्ष चढ़ाइए इक्कीस ब्रह्माण्ड शिव को।

'निरमुखी' (निरमुखी रुद्राक्ष = बिना मुखवाला रुद्राक्ष) रुद्राक्ष चढ़ाइए निराकार को। इतना रुद्राक्ष मन्त्र सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी! गुरुजी आदेश! आदेश!

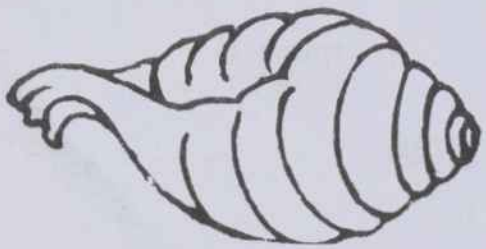

शाबर-शब्द-कोष

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर, (म. प्र.)

'शाबर-मन्त्र' प्रत्येक क्षेत्र में प्रचलित भाषा या बोली में होते हैं और कभी - कभी तो दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग भी एक ही मन्त्र में देखने को मिल जाता है। अतः इनका अर्थ जानना कठिन होता है। इसी समस्या के निवारण के लिए **'शाबर - मन्त्र - संग्रह, भाग–१'** में प्रकाशित मन्त्रों के कठिन शब्दों के समानार्थी शब्दों का कोष **'शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग–२'** के साथ प्रकाशित किया गया।

अब द्वितीय भाग के कठिन शब्दों के समानार्थी शब्दों का कोष प्रस्तुत है। इन कोषों में अधिक-से-अधिक शब्दों के अर्थ संग्रह करने का प्रयास किया गया है, फिर भी लोक-भाषाओं के बहुत सारे शब्दों के अर्थ अपने सीमित साधनों के कारण नहीं दे सका। **'शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग–१ और २'** के सम्मान्य लेखक बन्धुओं तथा अन्य विद्वज्जनों से निवेदन है कि लोक - भाषाओं के जिन शब्दों के अर्थ अप्रकाशित रह गए हैं, उनका अर्थ लिखकर प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें, जिससे साधक-समाज लाभान्वित हो सकें।

प्रथम भाग की तरह प्रस्तुत **'शब्द-कोष'** में भी अधिकांश शब्दों के अधिक - से - अधिक अर्थ देने का प्रयास किया गया है, जिससे किसी भी शब्द से उसके मन्त्र - गत अर्थ के साथ - साथ, उस शब्द के अन्य अर्थों का ज्ञान भी हो सके। इन दोनों **शब्द - कोषों** से यदि साधक-समाज लाभान्वित हुआ, तो मैं अपना श्रम सार्थक मानूंगा। इस कार्य में और भी सुघड़ता के लिए किसी प्रकार के सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

शब्द	अर्थ
(अ) अखुत	अकूत, अगणनीय
अगवान	अगुवा, आगे आनेवाला
अगारी	आगे, सामने, पहले

	अनल	आग, पित्त
	अम्बारी	हौदा, चन्दवा
	अलगा	भिन्न, पृथक्
(आ)	आईल	आया, आई
	आखा	आशा, उम्मीद
	आट	जङ्गल, वन
	आण	आन, कसम, सौगन्ध
	आपन	अपना
(इ)	इत्ता	इतना
(उ)	उचे	उच्च, उन्नत, बड़ा
	उढ़ना	कपड़ा, ओढ़नी
	उदन	जल, पानी
	उदन्त	बिना दाँतोंवाला, पोपला
	उधारा	उद्धार किया, मुक्त किया
	उपकन्थि	साधु, संन्यासी
	उभासू	द्विपक्षी, दोमुँहा
(ओ)	ओकर	उसका (की)
	ओपरी	ऊपरी, चमकदार, चिकना (नी)
(औ)	औघट	अगम्य, दुर्गम, दुस्तर
	औघड़	अघोरी, मन-मौजी
(क)	कछौटा	लँगोट, कौपीन
	कतरै	काटे
	कत्ती	धुरी, कटारी
	कन्दरी	गुफा, पैर की अँगुलियों का रोग, बिवाई या विपादिका
	कदेई	कभी भी
	कपार	खोपड़ी, मस्तक
	कमक्षा	कामाख्या देवी
	करतार	ईश्वर, कर्ता
	करवाल	तलवार, असि, खड्ग
	कवने	कौन, किस

	कवानी	कौन-सी, कैसी
	काची	कच्ची, अध-पकी, कमजोर
	कामरी	कम्बल, कमरी
	कामरू	कामाख्या-पीठ, असम का काम-रूप जिला
	काया	शरीर
	काँवरू देस	काम-रूप, कामाख्या-पीठ
	कासनी	रङ्ग-विशेष, एक वनौषधि, गेरुवा रँग
	कुञ्जी	चाबी, ताली
	कुण	कौन
	कुदरत	प्रकृति, दैवी-शक्ति
	कैवारे	कपाट, किवाड़, दरवाजा
	क्यौरा	कोयला
(ख)	खरी	उत्तम, अच्छी, चोखी
	खरुवा	पैर के तलुवे की खाल फटने का रोग
	खासा	विशेष, निजी
	खूंट्टा	खूंटा, खम्भा, मेख
(ग)	गगन	आकाश
	गडुवा	टोंटीदार लोटा, कलश, जल-पात्र
	गलनु	घुलन-शील, नाशवान, पिछलना
	गाऊ	गाँव, नगर, पुरवा
	गाछ	गूंथना, मिलाना
	गुणवा	गुणी, होशियार, प्रवीण
	गुनवन्ता	चतुर, गुणवान
	गेड़िया	तकिया, सिरहाना, टोंटीदार लोटा
	गेरूँ	घुमाऊँ (ना), चक्कर लगाऊँ (ना)
	गेलि	गई (या)
	गेल्याँ	गली, रास्ता, कुलिया
	गैल	गली, रास्ता, पगडण्डी
	गोड़े	पैर
	गोहरि	कण्डा, छाना
(घ)	घट्टा	घाट, नदी या तालाब का किनारा

	घ्रीत	सूँघना, गन्ध लेना
(च)	चट्टी	खड़ाऊँ, पैरों का जनाना गहना, हानि
	चलल	चला, चलना
	चाऊर	चावल
	चाटक	इन्द्र-जाल, विद्या, मण्डली
	चाम	चमड़ा (ड़ी), त्वचा, खाल
	चेत	चैतन्य होना, सतर्क, सुधि, याद, बोध
	चोलना	वस्त्र, चोला, शरीर
	चौषष्टि	चौंसठ (६४) की संख्या
(ज)	जमराज	यमराज, दक्षिण दिशा के दिक्पाल
	जरवा	पौधा, झाड़ी
	जर्द	पीला रङ्ग
	जावा	जाओ
	जियान	जीवित, जिन्दा
(झ)	झाँई	प्रतिध्वनि, प्रतिबिम्ब, झलक
(ठ)	ठौठा	हँसना, हँसी-मजाक करना, हँसी उड़ाना
(ड)	डिठी	(बुरी) नजर, (कु) दृष्टि
	डोठ	(बुरी) नजर, (कु) दृष्टि
(त)	तन्त	प्रबन्ध, व्यवस्था
	तरण	उतरना, तैरना, डोंगी या छोटी नाव, स्वर्ग
	तरवार	तलवार, असि
	तरी	नीचे, तली, पेंदी, नाव
	ताई	पिता के बड़े भाई की स्त्री, चाची
	तागड़ी	करधनी, कटि-सूत्र, गद्दे आदि तागनेवाला
	ताबा	सेवक, नौकर, वशीभूत व्यक्ति
	ताहो	तेरा, तुम्हारा
	ताह्नो	तेरा, तुम्हारा
	तितरी	तितली
	तुपक	बन्दूक, पिस्तौल
	तुरित	शीघ्र, झटपट, तत्काल
	तुसा	भूसा (सी), चोकर

तुहृ	तुषार, तुसार, ओस
त्राण	रक्षण, निस्तार, बचाव
तेऊ	वे, वे भी, सबके सब
तेकर	उसके, उनके
तेहारे	तुम्हारे
तोय	तुम्हें, तुझे, जल
(थ) थम्बा	पाया, रोकना, ढेर
थाक	राशि, थकावट, गाँव की सीमा, ढेर का ढेर, थक्का
थाकगे	थक गए
(द) दरसे	दिखे, दिखाना
दसना	दाँत, दिखना, दस की संख्या
दीठ	(बुरी) नजर, (कु) दृष्टि
देवाली	दीवाली का त्यौहार
दोचरा	दुहरा, दूसरा, दोमुँहा
(ध) धनुआ	धनुष, चाप, कमान, धनु-राशि
धरणी	धरती, नाभि, लट्टू की कील, नाड़ी, शाल्मलि (सेमर) वृक्ष
धरन	धरती, पृथ्वी, नाभि, २४ रत्ती का वजन, एक पल का दसवाँ हिस्सा
धरीत्री	धरती, पृथ्वी, भूमि
(न) नहचो	नीचा
नाऊँ	झुकाऊँ (ना), नवाऊँ (ना)
नातरि	नहीं तो, नान्यथा
निम्राणे	पृथक्, न्यारा, किङ्कर्तव्य-विमूढ़ होना
निस्सीम	सार-हीन, तुच्छ
नेऊँता	न्योता, निमन्त्रण
नोन	नमक
(प) पगथली	पैर का तलुआ
पनिहारी	पानी भरनेवाली
पयानी	जानेवाला, बिदाई

पराता	परात, बड़ी थाली
पलड़ाना	पलटा हुआ, तराजू का पल्ला
पलान	घोड़े की जीन, भागना, भय के कारण एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को जाना, प्रस्थान
पसारा	फैलाव, विस्तार
पाक	पवित्र, पकना, रसोई, उलूक या उल्लू
पातशाह	बादशाह, सम्राट्, राजा
पिण्ड	शरीर, देह, गोल, वर्तुलाकार, पितरों के उद्देश्य में दिया जानेवाला अन्न
पेस	मृदु, मुलायम, क्षीण
पैसल	मृदुता, सुशीलता, सुकुमारता
(फ) फाड़ल	फाड़ा, काटा
(ब) बगेरि	फैलाना, बिखेरना
बाट	रास्ता, मार्ग, डगर
बार	क्रम, देर
बावरी	उन्मत्त स्त्री, विक्षिप्त
बास	निवास-स्थान, डेरा, बसेरा, महक, गन्ध
बिछिया	नूपुर, स्त्रियों के पैर की अँगुलियों में पहना जानेवाला आभूषण
बियाई	जन्म (देना) दिया, प्रसव
बिलाई	बिल्ली, कद्दूकस, घुमना, खोजना
बिलाऊ	बिल्ली, मार्जार, कद्दूकस
बिलार	मार्जार, बिलाव
बिसरावे	भुलावे, बहकावे
बीड़ा	लगा हुआ पान, गिलोरी, वीटिका, प्रयत्न
(भ) भट्टा	बड़ा चूल्हा, भाड़
भटियारी	सराय की मालकिन
भाखता	वक्ता, बोलनेवाला
भाड़ा	मजदूरी, किराया, शुल्क
भाँत	प्रकार, तरीका, रीति, ढङ्ग

	भ्रान्त	भटका हुआ, शङ्कालु, भ्रमित
	भ्रान्ति	भूल, भ्रम, संशय, शङ्का
	भार	वजन, बोझ, गुरुत्व
	भिदि	भेदा जाना, छेदा जाना
	भीत	डरा हुआ, दीवार
	भुइयाँ	भूमि, पृथ्वी
	भुञ्ज	झुकाना, मोड़ना, टेढ़ा करना
	भुनसारे	सबेरे, प्रातः-काल
	भुरकी	राख, भस्म
	भूज	भूनना, तलना
	भूमा	पृथ्वी, धरती, भूमि
	भैरूंनाथ	भैरवनाथ
	भैरूँ	भैरव
	भोर	सबेरा, प्रातः-काल
(म)	मँगरा	खपरैल, खपरा, बण्डेरी
	मखनो	हाथी
	मड़इया	झोपड़ी, कुटी
	मतवाय	उन्मत्तता, मतवालापन
	मद	नशा, शराव
	मदरा	उन्मत्त, नशे में, शराब, मद्य
	मदे मासे	मधु-मास, बसन्त ऋतु
	मन्दरा	मोटा, सघन, मन्दराचल पर्वत
	मसान	श्मशान, मरघट, पितृ-कानन
	मसानी	श्मशान का (की), श्मशान-वासी
	महा-चीन देश	वर्तमान तिब्बत
	महिला	महल, राज - भवन, स्त्री, मद-मत्त या विलासिनी स्त्री, प्रियंगु-लता
	माई	माँ, जननी
	माहो	मेरा
	माह्रो	मेरा
	मांहीं	में, भीतर, उधर ही, उसमें ही

	मिलि	मिला हुआ, सम्मिलित
	मिसैलो	मैली-कुचैलो, कुचली हुई
	मुछ्याँ	मूँछ
	मूठ	शाबर - मन्त्रों द्वारा किया जानेवाला मारण-प्रयोग, बैंट, दस्ता
	मूड़	सिर, मस्तक, कपाल
	मूवे	मरे
	मेड़ो	खेत की मैढ़, गाँव की सीमा
	मोय	मुझे
	मोर	मेरा (री), मयूर पक्षी
	म्हारी	मेरी, हमारी
(य)	यति	संन्यासी, परिव्राजक
	याम	प्रहर, पहर, तीन घण्टे का समय
(र)	रजवाड़	राज्य, राज-परिवार
	रस्तान	राहगीर, पथिक
	राँड़	विधवा स्त्री
	राँपी	खुरपी, घास काटने का औजार
	राणी	रानी
	रिसियाए	रूठे, क्रोधित
	रूपा	चाँदी, रजत
(ल)	लंगुल	पूँछ, शिश्न
	लरी	पंक्ति, माला
	ललजार	लाजवन्ती का पौधा
	लास	मुर्दा, मृत शरीर
	लिलार	ललाट, मस्तक, प्रारब्ध, नसीब
	लुहाँगी	लोहे से मढ़ी हुई लाठी
(व)	वाछ	चुनाव
	वारी	क्रम, घर, मकान
	वाहि	वही
	विकराल	भयानक, डरावना
	विकजाल	घने बाल

(श) शाकिनी — एक निम्न स्तर की देवी, पिशाचिनी
शालि — धान
शीश — सिर, मस्तक
(स) सङ्गी — साथी, मित्र, सहचर
सगरो (री) — सारा (री), सब, पूरा
सठ — धूर्त, ठग
सम्भार — मिलाना, एकत्र करना, सँभालना
सहचरी — सखी, सहेली, सदा साथ रहनेवाली
सहाई — सहायक, मददगार
साँईं — स्वामी, प्रभु, भगवान्
साँग — बर्छी, भाला, सेल
सामा — सामान, भोजन-सामग्री
सार — लोहा, सत्त्व, किसी वस्तु का उत्तम भाग
सिङ्गी — सींग से बना मुख-वाद्य
सिद्धाँ — सिद्ध
सोगरो (री) — सारा (री), सब, पूरा
सुतारी — खेती का एक औजार—सम्भवतः हँसिया
सुमरों — स्मरण करना, भजन करना
सूती — सोती हुई, कपास के रेशों से बना कपड़ा
सेवे — सेवा करे, रखवालो करना
सोंटा — डण्डा
(ह) हनु (नू) — हनुमान, ठोड़ी, शस्त्र, बीमारी, मृत्यु, स्वेच्छाचारिणी स्त्री, वेश्या
हमजोला (ली) — मित्र, साथी, सहचर (री)
हाट — बाजार
हुड़क — डाँट-डपट, बिना कारण उत्तेजित होना, दरवाजे की साँकल, अर्गल

शाबर-मन्त्र-मुक्तावलि

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर (म. प्र.)

'शावर-मन्त्र-संग्रह' के दोनों भागों में मेरे द्वारा ३७ मन्त्रों को प्रकाशित किया जा चुका है। प्रस्तुत संग्रह में प्रकाशित सारे मन्त्र मेरे परम पूज्य गुरुदेव श्री परब्रह्मानन्दनाथ जी (लौकिक नाम-आचार्य दौलतराम जी 'शास्त्री' सोनी) के संग्रह में मिले हैं। इनमें से अधिकांश मन्त्र उन्हें सिद्ध थे और समयानुसार इनके प्रयोग भी किए जाते थे। जैसा कि पहले भी स्पष्ट कर चुका हूँ कि शाबर मन्त्रों की उपासना मेरा क्षेत्र नहीं है, अतः इस विषय में कुछ भी जानने की चेष्टा नहीं की। मुझे जो भी मन्त्रादि जैसे मिले, उन्हें ज्यों-का-त्यों प्रकाशित किया है। जैसा कि शावर-मन्त्रों में देखने को मिलता है कि मन्त्र तो उपलब्ध हैं, किन्तु उनकी उपासना और प्रयोग-विधि का कोई उल्लेख नहीं रहता। इस प्रकार के काफी मन्त्र पिछले दोनों संग्रहों में प्रकाशित हुए हैं। मेरे पिछले संग्रह में भी कुछ मन्त्र इस प्रकार के थे और प्रस्तुत संग्रह में भी हैं। इनके विषय में मात्र इतना ही निवेदन है कि इनकी उपासना और प्रयोग-विधि के लिए किन्हीं अनुभवी साधक की शरण ली जाए।

प्रस्तुत संग्रह के क्रमाङ्क ३० से ३५ तक के मन्त्र अन्यत्र से प्राप्त हुए हैं। प्रारम्भ के क्रमांक १ से १९ तक के मन्त्र 'मारण'-सम्बन्धी हैं और अत्यन्त उग्र हैं। इनके प्रयोग में अत्यन्त सावधानी अपेक्षित है। पुनः चेतावनी देना मेरा कर्त्तव्य है—कृपया इन प्रयोगों की सिद्धि का दुरुपयोग कदापि न करें। अभिचार आदि के चक्कर में किसी उच्च-साधक या तान्त्रिक से न टकरा जाएँ, वरना प्राण भी जा सकते हैं। शाबर-मन्त्रों की शक्ति सीमित है और बड़ी आसानी से प्रयोग-कर्त्ता पर ही लौट पड़ते हैं। यदि प्रयोग-कर्ता जरा भी असावधान रहा, तो उसकी मृत्यु निश्चित होती है। अतः पूरी सावधानी और श्री गुरुदेव के निर्देशन में ही प्रयोग किए जाएँ।

यह सोचा जा सकता है कि मैं 'मारण' के प्रयोगों को क्यों प्रकाशित कर रहा हूँ ? क्या क्षुद्र व्यक्ति इनका दुरुपयोग नहीं करेंगे ? आदि । इस विषय में मात्र इतना ही कहूँगा कि क्षुद्र व्यक्तियों के द्वारा सम्भावित दुरुपयोग के भय से उनको क्यों वंचित रखा जाए, जो क्षुद्र प्रवृत्ति के नहीं हैं और जिन्हें सन्मार्ग पर स्थित रहने के लिए इनकी आवश्यकता पड़ सकती है । रही बात 'गोपनीयता' की, तो यह सभी जानते हैं कि गोपनीयता के अति-वाद ने आगम-शास्त्र को कितनी क्षति पहुँचाई है । यदि हम इसी प्रकार 'गोपनीयता' के पुजारी बने रहे, तो धीरे-धीरे अध्यात्म और उपासना आदि केवल इतिहास की बातें रह जाएँगी ।

मेरे विचार से सारे साहित्य का प्रकाशन अनिवार्यतः किया जाना चाहिए । ताकि विदेशी लुटेरों से जो थोड़ा-बहुत बचा है, वह भी लुप्त न हो जाए । गोपनीयता मिटाने के मूल उद्देश्य से ही 'कौल-कल्पतरु चण्डी' का प्रकाशन पूज्य-पाद 'कौलादित्य' पण्डित देवीदत्त जी शुक्ल ने प्रारम्भ किया था और पिछले पचास वर्षों से 'चण्डी' गोपनीयता के विरुद्ध दहाड़ रही है । यदि 'चण्डी'-परिवार (समस्त लेखक और पाठक) ही गोपनीयता की दुहाई देगा, तो हो चुका तन्त्र की सारी विधाओं का उद्धार ! तन्त्र की किसी भी विधा का प्रकाशन होना ही चाहिए, इसी उद्देश्य से मैं भी इन उग्र और गोपनीय प्रयोगों को प्रकाशित करके 'गोपनीयता' के नक्कार-खाने में अपनी तूती बजाने का प्रयास कर रहा हूँ ।

मारण

१ नारसिंह बीर—**खत की करूँ पूजा, रकत का बहे पवन, उलट बेलिया बैठ बीर, फलाँ का कलेजा चोर, नारसिंह बीर न चोरै, तो हजरत सुलेमान पैगम्बर के तख्त में जकड़ा जावे, दुहाई नारसिंह महावीर की ।।**

विधि—एक नारियल, एक नीबू, पाँच किस्म की मिठाई सवा पाव, सन्दल का बुरादा, अगरबत्ती और एक फूल-माला—ये सारी चीजें लेकर नदी के किनारे जाए । अगरबत्ती और सन्दल का बुरादा जलाकर नीबू छोड़कर सारी सामग्री अर्पित करें और १२१ बार नीबू को दम करें । फिर सारी सामग्री वहीं छोड़कर नीबू अपने साथ

ले आवे । इस नीबू को जिसके लिए अभिमन्त्रित किया था, उसके घर के दरवाजे पर फेंक दें और यह कहें—"यही घर है, यही आदमी है, ख्याल रखना ।" वह आदमी घर से बाहर निकलते ही गिरकर खत्म हो जाएगा ।

२ भीमसेन—**भीमसेन बलवारो, कुन्ती माँ को पूत, हाथ खड्ग माथे तिरसूल, जिसकी हाँक पड़ी बड़ी दूर, हाय-हाय कर लायै भूतन के खरवार, मेरी आन मेरे गुरू की आन, मेरी भगत गुरू की शकत, अब पहुँचो रे बाबा भीमसेन, जो कों कहों उसको ले के आव, अब कहूं मुरकै, तो जी ने जायो तो की आन, अब मुरकै, तो गुरू को मांस खाये ।**

विधि—कृष्ण-पक्ष में शनिवार या रविवार को एकान्त स्थान अकेले जाकर दीपक की पूजा करके जपे, तो दो दिन में शत्रु का नाश हो, बचे नहीं । बहुत सावधानी से किया जाए, लापरवाही न हो । इस मन्त्र से बचना कठिन है ।

३ कलुप्रा—**कारो कलुआ काली रात, जा बैठ बैरी की खाट, मारो बरी करो बैरनी राँड़, आँगूं बैरी पांछूं खाट, ओदी तोती लकड़ी बार, धुंवा देख घर आव, हाथ में जी लै आव गुरू के पास, मेरी भगत गुरू को सकत, अब देखो रे अजैपाल ! ये ना जाय, तो बहन भानजो की आन ।।**

विधि—पीपल के पत्ते पर पुतरिया लिखकर १०० बार मन्त्र पढ़े और काली फरिया तथा नारियल से पूजा करे । फिर उड़द पर मन्त्र पढ़कर पीपल के पत्ते में रखे और शत्रु के दरवाजे में खोंस दें, तो शत्रु उसी दिन मरे ।

४ कलुआ—**ॐ कारो कलुआ, कारी रात । जा बैठ बैरी की खाट, मारो बैरी करो बैरनी राँड़, आँगूं लकड़ी पाछूं खाट । ओदी - तोती लकड़ी बार, धुंआं देख घर आव । हाथ में जी लै, आव गुरू के पास । मेरी भगत, गुरू की शकत । अब देखो बाबा अजैपाल ! पूजा लै ना जाय, तो बहन भानजो की आन । खटोला न मुरकै ।।**

विधि—झाड़ू के तिनकों से खटोला बनावे और क्वाँरी कन्या के द्वारा काते गए सूत से उसे बुनें । एक अण्डे पर पुतरिया लिखे और एक मूर्ति बेसन की बनावे, इसे खटोले में रखे । घर के बाहर या श्मशान में पूजा करे । पूजन अर्ध - रात्रि में करे । पूजन में सूजो १,

सुपाड़ी और हल्दी की गाँठ ५-५, कोयले की गाँठ १, चूड़ी १, कपड़ा, ईंगुर, ध्वजा ४, नीबू १५, सिन्दूर, लौंग १, पान १ तथा उड़द की दाल, अर्पित करे और जप करे, तो खटोला ऊपर उठकर चौगेटा काटने लगेगा। तब मद की धार दे और मुर्गा काट दे। तब खटोला उड़कर शत्रु के घर जाकर शत्रु को मारेगा। यह भी भयानक प्रयोग है, सावधानी से किया जाए।

५ हनुमान—ॐ **हनुमत वीर ! काटो शरीर। जहाँ भेजों, जाय करो पीरा। काया बार अमल कर मार, अञ्जनी के दुलारे ! वज्र लै मार, गदा मार। जो मोसें खोटी करै, तेही मार। भगवान् के पूत ! सिला ले के मार। वज्र ले, मारु। हरदम हुकुम बजाव। साँचे गुरू का हुकुम बजाव। जिहै कहों, तिहै मार लै आव। गुरू की शकत, मेरो भगत। दुहाई गौरा पारवती की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥**

विधि—मङ्गलवार या शनिवार को १०८ जप करे, तो ६ मास में सिद्ध हो। जप-काल में गूगल (गुग्गुल) की धूप दे। प्रसाद में १ पाव गुड़, ५ लौंग, ५ बादाम, ५ पान, ५ सुपारी, १ नारियल, १। हाथ खारुआ, ५ नीबू, १ अठवाई, १ पाव दूध, सिन्दूर तथा चावल अर्पित करे। इसकी प्रयोग-विधि नहीं दी है।

६ हनुमान—ॐ **बारा भैरों, बावन वीर। सबके पैरों पड़ी जञ्जीर। चौंसठ जोगन खील दिया। जूठ-मूठ का गर्दन तोड़ा, परी रात के गर्दन मोड़ा। जन्तर-मन्तर पढ़े कोई, वैताल राखनवारा बन्द किया। रामचन्द्र के पायक बीर ! ऐसा दो दण्ड, जैसे दौड़े तीर। फाट जाय बैरी की छाती, ना छोड़ पुत्र, ना छोड़ नाती। जल्दी जाव, आम की कोंपल। काढ़ कलेजा, लोहू चख। मर जाय बैरी, मरघट बास। जैसा हम कहें, वैसा दण्ड दो। न दो, तो माता अञ्जनी की आन॥**

विधि—महावीर के सिर पर दिया रखो। फिर उठाकर सामने रख दो। जहाँ भेजना हो, आम की कोंपल के ऊपर मन्त्र पढ़कर फेंक दो और महा-वीर की १२१ उल्टी परिक्रमा करो। जैसा कहोगे, उसी प्रकार की तकलीफ दुश्मन को होगी। मारण चाहने पर मारण

होगा। किसी और पूजा की आवश्यकता नहीं है। इस प्रयोग में जप-संख्या का उल्लेख नहीं है।

७ नीबू बीर--**खम - खम नीबू, हसला घोड़ा, पाट का डोर। देखों रे नीबू, तेरी आन, नौ नाथ चौरासी सिद्ध की आन। फुरै मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।।**

विधि--शनिवार की रात्रि में तारों के उजाले में मन्त्र पढ़कर सेही का काँटा नीबू में छेदे। फिर नीबू पर सिन्दूर चढ़ावे और लोभान की धूप देकर कब्र में गड़ा दे, तो शत्रु की मृत्यु हो।

८ अजयपाल--**अजैपाल की धनुही, परसराम को बान। खैंच के मारै राजा दशरथ, बैरी तुरतै तजे प्रान ।।**

विधि--किसी कब्र के पास बैठकर यह मन्त्र बेसन की पूड़ी पर लिखकर पूजा करे। धूप दे और एक उड़द का बड़ा बलिदान करे तथा अण्डे पर पुतरिया लिखकर अर्पित करे। श्मशान में गड़ाकर १०८ बार जप करे, तो चालीस दिन में बैरी का विनाश हो। मन्त्र को पहले सिन्दूर से १०८ बार लिखकर सिद्ध करे।

९ कलुआ बीर--**कलुआ बीर तोतला, मार माँझ कपार। मरघट देऊं बोकरा, ऊपर मद की धार। अमुक की नाकी चला, कलुआ चाण्डाल। नाक चला, मुँह चला। इत्ते चला के न आवे, तो अपनी माँ के साथ हराम करे ।।**

विधि--दीवाली की रात में बकरे की कलेजी देकर २१ बार जपकर सिद्ध करो। जब भेजना हो, तब कलेजी का होम देकर नीबू पर ७ बार मन्त्र पढ़कर फेंक दो। नीबू पर सिन्दूर से साध्य का चित्र बनाना और नाम लिखना चाहिये। मारण होगा।

१० दादू बीर--**दादू बीर दादू चौधरी, चौदह विद्या का भण्डार। ऊपर जहमत जमाय तेरी ढीमरी। नओ पतेरो चमड़ा, आठ मन की पनही। नौ मन का सूजा। सूजा माँगे बत्तीस पूजा। सुपरी चमरनै नैता धोबी। ऊपर बाजा बाजै। मेरी आन, मेरे गुरू की आन। ईश्वर गौरा पार्वती की आन। नरसिंह पाँड़े की आन। जा रे नरसिंह बीर ! दुश्मन को मार के आवेगा, तो तेरे को सेन्दुर की पुरी देब ।।**

११ काली--इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की सारी। एक ऊपर नौ सै जादू साथ धरै। ब्रह्मा तन (पाठान्तर-सब भूतन) की लाड़ली, मरघट बीच बजावै ताली। गन चले, गनपत चले, माची बैठ रावन चले। टोरत करेजो, फारत दरवाजा। कुकरा लैहे बुकरा, ऊपर मद की धार। जातै लेय करेजो, बैरी डारै मार ॥

१२ काली--काली-काली महा-काली। इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की सारी। जा बैठी पीपर की डारी। हाली हिलाव, घाली घलाव। मेरा चोर हराम-खोर। हार की थैली, सीस को पसारा। माथे जटा कारे, महा-काली। मेरी भगत, गुरू की शकत। देखों महा-काली, तेरे मन्त्र की शकत। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

१३ भैंसासुर—आँझ-बाँझ की ईमली, अैठ बैठ गई डार। तरकतर है मैतिया, ऊपर भैंसा रखवार। वे भैंसा जिन जानों, जोतें तेली कलार। मैं भैंसासुर दानों, साँकर टोरों। सार की फोरों, वज्र किवार। करिया टोरों मुरगा, ऊपर मद की धार। मेरी भगत, गुरू की शकत। फुरै मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

१४. कलुआ वीर—कारो कलुआ, काली रात। कलुआ उपजै, अमावस की रात। कुन्द को लकड़ी, बोर मसान। अमुक का धुँआ देख, मेरा बैरी तेरे मुख में दिया। तैंई ले चूस। सीसे की धनुही, चाम के बान। खैंच के मारै कलुआ, छूट जाय प्रान। मेरी भगत, गुरू की शकत। देखों रे कलुआ, तेरे मन्त्र की शकत ॥

१५ काला वीर—अहो बोर काला, ओढ़े मृग-छाला। हाथ लये मोहनी, मोहन संसार। गौरा कँकार, महादेव बँकार। चौंसठ जोगनी, नचत आवैं। बोर काला, ढाँक बजावै। हाड़ की धनुही, सीस के बान। खैंच मारे बोर काला, बैरी तजै प्रान। गुरू की शकत, मेरी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

१६ विकट मन्त्र—हाथ लागे हथनिया, बाँह लागे करतार। बीर चार छाती लगे, भैरों मांझ लिलार। कील काला देव, किलकिल करै। रकत मांस के भोजन, बैरी मरघट में धरै। तीन पहर तीसरी घड़ी मारे, मरघट में डारे। मेरा बैरी तेरा भख, तीन पहर में कलेजा चख। गुरू की शकत, मेरी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरीय वाचा ॥

१७ भीलट—**भीला खेरी ीलट बसें, हनुमत बसें पहाड़। चौड़ा चौराहे बसें, कलुआ काली रात। जैतमाल हाथी चलें, भोंर वीर अगुआन। चन्दन काठ की पीड़ई चिकचिकी, धरी मरघटा जाय। बैठे बाबा भीलट, सब भूत करें किलकार। गुरू की शकत, मेरी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।।**

१८ रकतिया बीर—**रकतिया बीर कहाँ चले ? बैरी के घर चले, बैरी को मारने लगे। बैरी की छाती पर बैठने लगे, मूड़ फोर गूदा खाने लगे। छाती फोड़ कलेजा खाने लगे। जीमन का धुवाँ अकास को लगन लगे। जार खोर मट्टी करन लगे। रकतिया बीर दुश्मन को मार के आवेगा, तो तेरे को एक काला बच्चा दे देऊँगा। फिरकें जा रे रकतिया मसान, दुश्मन के अण्डा पैं बैठन लगे। चारों कोने पै बैठने लगे। फिरकें आवे, तो तेरे को सेन्दुर की पुरी देऊँगा।।**

१९ कामाक्षा देवी—**ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी, जहाँ बसें इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी लौंग चढ़ावें, चुनै लोना चमारिन। लोहे काटे, राजा काटे, वज्र ले दुश्मन को काटे। ॐ कामाक्षा देवी, धर मार, पटक मार। जहाँ भेजों, तहाँ मार। साँचे जोगी का हुकुम बाजब। गुरू की शकत, मेरो भगत। जिहै मार, तिहै लै आव। फुरै मन्त्र, ईश्वरू वाचा।।**

(क्रमाङ्क १० से १९ तक की विधि प्राप्त नहीं है)

आकर्षण, वशोकरण आदि

२० कामाख्या देवी—**ॐ कामरू देश कामाख्या देवी, तहाँ बैठा इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी दिए चार पान। एक पान सों राती माती। दूजे पान सों विरह सँजोती। तीजे पान सों अङ्ग मरोड़े। चौथे पान सों दोऊ कर जोड़े। चारों पान जो मेरे खाय, मेरे पास से कहूँ न जाय। ठाढ़े सुख न बैठे सुख, फिर-फिर देखे मेरा मुख। कामरू कामाख्या की आज्ञा फुरै, इन वचनों की सिद्धि पड़े। ॐ ठः ठः ठः ठः ठः ठः।**

विधि—नित्य १०८ जप २१ दिन तक करके सिद्ध करें। फिर रविवार के दिन ४ पान लेकर प्रत्येक पर ३-३ बार मन्त्र पढ़ें और चारों पानों का एक बीड़ा बनाकर खिला दें। 'साध्या' का वशोकरण होगा।

२१ कलुआ बीर—**हरा बगीचा कँचना, महोबे का पान। कलुआ बीर का पहला मन्तर। हनूमान मैदान, जोगिनी जा। जिसको मैं कहूँ, उसको पकड़ के ला। कवाड़ देश, बङ्गाल का इलम साँचा। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र ईश्वरी वाचा ।।**

विधि—ऊदबत्ती सुलगाकर १०० दाने की माला से २५,००० जप करने पर मन्त्र सिद्ध होगा। फिर किसी कङ्कड़ पर ७ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को बुलाना हो, उसके मार्ग में पीछे से आगे की तरफ इस प्रकार फेंके कि कङ्कड़ स्त्री के बाजू से निकलकर आगे गिरे। जहाँ वह कङ्कड़ गिरेगा, स्त्री उसके आगे नहीं जा सकेगी। लौटकर साधक के पीछे-पीछे चली जाएगी।

२२ विकट मन्त्र—**चल, चली चल। नारे चल, खोरे चल। अगाड़ो चल, पिछाड़ो चल। जिस पर मैं कहूँ, उस पर चल। कवाड़ देस, बङ्गाल का इलम साँचा। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।।**

विधि—होली या दीवाली पर ऊदबत्ती और कपूर जलाकर १२१ बार पढ़ने से सिद्ध होगा। फिर खाने-पीने की किसी भी वस्तु को सात बार अभिमन्त्रित कर खिलाने-पिलाने से वशीकरण होगा।

२३ बैहा नारसिङ्ग—**कामरू खण्ड कामाक्षा देवी, जहाँ बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी फूल चढ़ावै। एक फूल हँसै, एक फूल बिहँसै। एक फूल बैहा नारसिङ्ग बसै। जो लेय इस फूल को बास, सो उठ चलै हमारे साथ। जो ना उठ चले हमारे साथ, आधो रात कलेजा फटे। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरै मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।।**

विधि—सात बार अभिमन्त्रित पुष्प सुँघाने से वशीकरण होता है। पहले घी की आहुति देकर १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें।

२४ लोना चमारिन—**कामरू देश कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी की लगी फुलवारी, जे के फूल चुनै लोना चमारिन। जो लेय इस फूल की बास, उसकी जान हमारे पास। घर छोड़, घर-आँगन छोड़, छोड़ै कुटुम्ब मोह-लाज। दुहाई लोना चमारिन की ।।**

विधि-(अ)—७ बार अभिमन्त्रित पुष्प सुँघाने या मारने से वशीकरण होता है।

(ब) पीपल के वृक्ष के नीचे जो मन्दिर हो, वहाँ जाकर जिसका मन्दिर हो, उसे सिन्दूर आदि चढ़ावे और एक नारियल चढ़ावे। पूजन में सात फूल चमेली के अवश्य हों, फिर एक फूल पर १२१ बार मन्त्र पढ़कर जिसे मार दिया जाएगा, वह स्त्री वशीभूत होकर साधक के पीछे-पीछे चली आएगी। **यह क्रिया प्रत्येक प्रयोग के समय करनी होगी।**

२५ अल्लाह—**सूर चले, जञ्जीर चले। लौलाक पर्वत चले, अलिफ नाम अल्लाह का चले। किस पर चले, फलाँ बिनते फलाँ के सर पै चले। ला इलाह ला दो, इल्लल्लाह बुला दो। इस नबी के कलमे से मेरे कदमों पै झुका दो॥**

विधि—उक्त मन्त्र जपने के पूर्व निम्न मन्त्र ३ बार पढ़कर अपने सीने पर फूँक मारें—**ला इलाह की कोठरी। इल्लल्लाह की खाई, अली नबी की चौकी। गफूरुर्रहीम की दुहाई।**' फिर उक्त मन्त्र को १२१ बार पढ़कर सो जाएँ। दिन का कोई सवाल नहीं, फिर भी जहाँ तक हो सके, रविवार से प्रारम्भ करें। प्रायः तीन दिन में 'साध्या' का वशीकरण हो जाता है।

२६ आकर्षण—**होवल्लजी खलकुश् शमा वातो वलअर्द फीसित्तते अय्याम॥**

विधि—स्त्री के बाँएँ पैर के नीचे की मिट्टी लेकर नए सफेद कपड़े में बाँधकर अपने दाहिने पैर में इस प्रकार बाँधे कि पोटली नीचे दबाई जा सके। फिर उस पैर को जोर से जमीन पर जमाकर (इस प्रकार कि मिट्टी की पोटली पर दबाव पड़े) उपर्युक्त आयत (मन्त्र) को पढ़ते रहें। घण्टे-दो-घण्टे में वह स्त्री आ जायगी। यह प्रयोग रविवार या मङ्गलवार को करे।

दूसरी विधि यह है कि स्त्री के बाँएँ पैर के नीचे को मिट्टी पर १२१ बार मन्त्र पढ़कर आग में डाल दें। इससे उसके हृदय में दाह उत्पन्न होगी और वह आएगी।

२७ वशीकरण—**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॥**

विधि—मुँह में दूध भरकर उक्त मन्त्र ७८६ बार पढ़ें। फिर वह दूध उगलकर किसी पदार्थ में मिलाकर जिस स्त्री को खिला-पिला दिया जाए, वह आजीवन वश में रहेगी।

२८ अजाजील शैतान--अलग जोगी, अलग रहमान। मेरी सूरत शकल का बन, अजाजील शैतान। फलाँ को उठाओ टाँग, कर हराम चोद डाल, चूमा ले, छाती पकड़ के कर हराम। न करे, तो तेरी मां-बहिन भानजो की सेज पं लोनिया चमार देवी चढ़ै। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, चलो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥

विधि—किसी भी रात में सोने के पहले बिस्तर में नग्न होकर मैथुन के समान स्थिति में बैठकर साध्य स्त्री का ध्यान करके १२१ बार मन्त्र पढ़कर सो जाए। लगातार ३-४ दिन प्रयोग करने से साध्या वशीभूत होगी। **क्रमांक २५ की विधि में बताए–'ला इलाह की कोठरी–' मन्त्र को तीन बार पढ़कर अपने सोने पर फूँक मारें, तब यह प्रयोग करें।**

२९ वशीकरण के टोटके–

(अ) जब रविवार या मङ्गलवार को कुत्ते और कुतिया की लेंड़ फँसी हो, उस समय दोनों के सामने एक-एक कटोरे में गाय का शुद्ध घी रखे। थोड़ा-थोड़ा घी चाट चुकने पर कटोरे उठा लो और बाकी बचे घी को सुरक्षित रखो। कुतिया का जूठा घी लगा देने से स्त्री वशीभूत होती है और कुत्ते का जूठा घी लगाने से वशीकरण खत्म हो जाता है। बिना मन्त्र का सिद्ध प्रयोग है। पन्द्रह मिनिट में काम करता है।

(ब) दोनों रान, दोनों काँख और दोनों कानों के पीछे का मैल रविवार या मङ्गलवार को खिलाने से वशीकरण होता है।

३० लोना चमारिन--फूल फूले फूलों की डाल। वो फूल बीने लोना चमारिन। एक फूल हँसे, एक फूल बैहचा नारसिंह के बसे। जो कोई ले फूल की बास, वो आवे हमारे पास। डगर कुआँ पनघट बैठी हो, उठा ला। सोवत हो, जगा ला। ठाढ़ हो, चला ला। मोह के मेरे पास न लाए, तो सच्ची मोहिनी न कहाय। दुहाई लोना चमारिन की, आन वीर मसान की॥

विधि--उक्त मन्त्र से पुष्प को ७ बार अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को मार दे या सुँघा दे, वह मोहित होगी। पहले इस मन्त्र को पूरी तरह कण्ठस्थ कर लें और जब कार्य करना हो, तब लोना

चमारिन को एक नारियल तथा पाँच खारक (छुहारे) भेंट दें, तभी प्रयोग करें।

३१ करुआ वीर--**कारा करुआ, आवन वीर। सब तिरियों में तेरा शरीर। हालठ की मिट्टी, पैर की छाल। पकड़ के मारो मङ्गल-वार। मङ्गलवार कियो सिङ्गार। अब न देखोगे घर की बार। घर छोड़े, घराना छोड़े। छोड़े घर का कन्त। आवे तो आवे, नहीं वीर वेताल की लात छाती में घावे। मेरी आन, मेरे गुरू की आन। ईश्वर गौरा पार्वती महा-देव की दुहाई॥**

विधि--मरघट की राख और स्त्री के बाँएँ पैर के नीचे की धूल को लेकर उक्त मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित कर मङ्गलवार के दिन उसी स्त्री के सिर पर छिड़क दें, तो वह वशीभूत होगी।

३२ धूल--**धूल-धूल तू धूल की रानी। जग - मोहन, सुन मेरी बानी। जल से धुला आन पढ़ूँ, तब पारबती के वरदान। धूलि पढ़ूं, अमुकी अङ्ग आकर रहें फलाने सङ्ग। मेरी आन, मेरे गुरू की आन। ईश्वर गौरा पार्वती महा-देव की दुहाई॥**

३३ धूल--**सोहनी-मोहनी दोऊ बहनी, अगली छोड़ पिछली को धावे। ठग मोहे, ठाकुर मोहे। मोहे पूरे पनिहार। राजा मोहे, दरबार मोहे। पाँय पड़ी जञ्जीर। यह त्रिया हमें मोहे। दुहाई वीर मसान की। आन कामरू कामक्षा देवी की॥**

विधि--(३२-३३) साध्या के बाँएँ पैर के नीचे की धूल और श्मशान की राख ७ बार अभिमन्त्रित कर उसके सिर पर छोड़ें। वशीभूत होगी।

३४ सरसों--**कामरू देश कामाक्षा देवी, जहाँ बसे इस्मायल योगी। चल रे सरसों कामरू जाई, जहाँ बैठी बुढ़िया छुतारी माई। भेजूँ सरसों उसके खप्पर, कर रे सरसों, अमुकी को वश कर। न करे तो गुरू गोरखनाथ, बङ्गाल खण्ड, कामरू कामाक्षा देवी, इस्माइल योगी लजाए॥**

विधि--२१ बार अभिमन्त्रित सरसों जिसे मारी जाएँगी, वह स्त्री वशीभूत होगी।

३५ मिठाई—सोहनी-मोहनी दोऊ बहनी, दोनों पनिया जाए। इन्द्र मोहे, इन्द्रासन मोहे। बैठ पाताल वासुकि कन्या मोहे, हाथ धरे हाथ जस पावे। पेटे जाय, तो सब ही रस खावे। मोह के मेरे पास न लाए, तो राजा वासुकि की कन्या न कहाए। मेरी आन, मेरे गुरू की आन। ईश्वर गौरा पार्वती, महा-देव की दुहाई॥

विधि—मिठाई को २१ बार अभिमन्त्रित कर जिसे खिला दिया जाए, वह स्त्री मोहित होकर साधक के पास आ जाती है।

विविध उपयोगी साधन

३६ काली-मन्त्र—काली-काली महा-काली। इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली। कूचे पान बजावे ताली, चल काली कलकत्तेवाली। आल बाँधूँ, ताल बाँधूँ और बाँधूँ तलैया, शिव जी का मन्दिर बाँधूँ, हनुमान जी की दुहैया॥

विधि—नदी किनारे जाकर १ फूल-माला की कुण्डली बनाकर उस पर दीपक रखकर जलावे। अगरबत्ती, चन्दन का बुरादा जलाकर रोज १२१ बार जप करे। तीसरे दिन प्रत्यक्ष होकर अपना हक माँगेगी। उस समय १ पान उल्टा और १ पान सीधा (चिकना भाग ऊपर रहे) रखकर उस पर कपूर जला दो और दाहिने हाथ की अनामिका में सुई चुभाकर एक बूंद खून निकालकर, जमीन पर टपका दो। फिर तीन वचन ले लो कि बुलाने पर हाजिर होना पड़ेगा और जो काम कहा जाय, करना होगा। इसके बाद जब भी याद किया जाएगा, देवी उपस्थित होगी और काम करेगी।

३७ विपरीत चालन—उलट तेल राई का, छाती बाँधूं डाइन का। डाइन गुन बाँधूं, अपना गुन लगाऊँ। दुहाई नारसिंह महा-वीर की॥

विधि—कर्तव्य उल्टा फेरने के लिए २५ बार मन्त्र पढ़कर ऊपर फूंक दो, तो करनेवाला खुद सङ्कट में पड़ जाएगा।

३८ झाड़नी—हनुमान हठीले, लोहे की लाट, वज्र का ताला, सिंह का घोड़ा, लोहे की लगाम, ता पै बैठे हनुमंत जती। भूत को बाँध, परीत को बाँध, घर को बांध, बाहर को बाँध, डीठ को बाँध,

मूठ को बाँध । इतने बांध के जेर न करे, तो माता अञ्जनी की आन ।।

विधि—महावीर के सामने ७ दिन तक गूगल की धूप देकर १०८ जप कर सिद्ध करें । आवश्यकता पड़ने पर अगरबत्ती, तलवार या चाकू से झाड़ें ।

३९ विविध रोगों की झाड़नी—**बाबा आज बालक कहाँ चले, सवा लाख पर्वत पै चले । सवा लाख पर्बत से का लाए, लोहा लक्कड़ । का करो, माथे से मारो, ताप तिजारी, बेल जुरा, नहरुवा टहरुवा, आधा-सीसा, राँगन वाय, ताप-तिल्ली इसी वक्त से भसम कर, ना करे, तो मार हु-कार ! नील-कण्ठ बाबा अजयपाल की दुहाई ।।**

विधि—अमावस और पूर्णिमा को गाँजे का होम देकर १२१ बार पढ़कर सिद्ध कर लो । फिर किसी भी चीज से झाड़ने पर मन्त्र में कहे गए सभी रोग नष्ट होते हैं ।

४० सूखी-मैली (स्त्री-रोग)—**हनुमान हठीले, लोहे की लाट, वज्र का खोला । भूत को बाँध, परीत को बाँध । मैली कुच-मैली, कूँख मैली, रक्त मैली । ऐसी चौदा मैली पकड़ चोटी न निकाले, तो अञ्जनी का दूध हराम करे । महा-देव की जटा में आग लगे । ब्रह्मा के वचन से, रामचन्द्र के वचन से, मेरे वचन से, मेरे गुरू के वचन से इसी वक्त भाग जा ।।**

विधि—महा-वीर के सामने गूगल का होम देकर १२१ बार मन्त्र पढ़कर सिद्ध करें, फिर कपड़े आदि से झाड़ें ।

४१ शत्रु को डण्डा मारना—**आऊ अक्कहार जुल जुलाल । पकड़ चोटी धर पछाड़ । मार-मार डण्डा मार, आधी रात मार, न मारे तो फिस्वहू मुहम्मद रसूलिल्लाह की आन ।।**

विधि—दिवाली के ४-६ दिन पहले नीम के वृक्ष की एक ऐसी सीधी डाल चुनें, जिसका २।। हाथ का डण्डा बन सके । फिर उसी दिन पेड़ के नीचे पीले चावल रखें और तेल का दीपक जलाकर १२१ बार मन्त्र पढ़ें और प्रत्येक आवृत्ति पर पेड़ पर फूंक मारते जावें । ऐसा दीवाली तक करें । दीवाली की रात को लोभान, नारियल, खोर, पूड़ी और चिरौंजी रखकर नङ्गे होकर, पेड़ पर चढ़कर एक ही झटके

में वह डाल काढ लें, जिसे पहले दिन चुना था। डाल नीचे न गिरने पाए, यह विशेष ध्यान रखें। नीचे उतर कर, उसे छील-काटकर, २॥ हाथ का डण्डा बना लें। फिर डण्डे को उसी पेड़ से टिकाकर, ऊपर लिखी सामग्री से डण्डे की पूजा करके कपड़े पहिन लें और १२१ बार मन्त्र पढ़ें तथा डण्डा लेकर घर आ जावें। प्रत्येक शुक्रवार को डण्डे को लोभान की धूप दें और मन्त्र पढ़कर फूँक मारें।

जब किसी को डण्डे से पीटना हो, तब नगर या गाँव के बाहर जाकर, उसका नाम जमीन पर लिखकर, ७ बार मन्त्र पढ़कर वही डण्डा नाम पर मारें। शत्रु जहाँ भी होगा, उसे डण्डे की मार पड़ेगी।

४२ गिरता गर्भ रोकना—**समन्द-समन्द में टापू, टापू में द्वीप, द्वीप में क्वाँरी कन्या, क्वाँरी कन्या काते सूत, गण्डा बनावे अञ्जनी का पूत, जौ लौं गण्डा गोद में रहै, तौ लौं गर्भ गिरन नहीं कहै। गिरै तौ वासुदेव की आन, गिरै तौ ब्रह्मा की आन, गिरै तो नरसिंह की आन। गिरै तो महा-देव की जटा पै, गिरै तो पारवती के चीर पै, देखों महावीर स्वामी तेरे मन्त्र की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥**

विधि—कच्चा सूत या क्वाँरी कन्या के द्वारा काता गया सूत लेकर स्त्री को खड़ी करके, उसके पैर के अँगूठे से, उसके हाथ ऊँचे करके नाप लें। फिर उसका ७ गुना सूत लेकर ७ लर करें और जितने महीने का गर्भ हो चुका हो, उतने छोड़कर बाकी गठान लगा दें। प्रत्येक गठान लगाते समय ७ बार मन्त्र पढ़ें, फिर गुग्गुल को धूप देकर गण्डा बाँध दें और उससे एक नारियल तथा सवा पाव मिठाई लेकर महा-वीर को चढ़ाकर बच्चों में बाँट दें।

४३ गिरता गर्भ रोकना—**उलटन्त दीप, पलटन्त धारा। पलटन्त बाँधी, दसों द्वारा। जो गङ्गा उल्टी बहै, अर्जुन चूकै बान। अरे गर्भ तो है, फिर गिरै तो गौरा पार्वती महा-देव की आन।**

विधि—क्रमाङ्क ४२ के समान।

४४ मूठ लौटाना—**काँवरी खण्ड कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के चार चक्र, लोहे की गड़ी, कारी कुत्ती, मच्छी झेल, मूठ झेल तीन सौ साठ, अग्गम को अग्गम झेल, पच्छम**

की पच्छम झेल । जिसने करा, उस पै पड़ै । इसके शरीर की रक्षा बैहर नारसिंह करै ।।

विधि–गूगल की धूप और नारी का फूल देकर ७ दिन तक १२१ बार नित्य जपें । प्रयोग करते समय चाकू या तलवार से झाड़ें ।

४५ अपनी काया बाँधना और झाड़नी–**बार राखै, बारका । शीश राखै, सोखा बीर । नारी राखै, नाहरसिंह । कपाल राखै, जोगनी । आगा राखै, इन्द्रसिंह । पाछा राखै, भीमसिंह । बारा कोस अगाड़ू राख, बारा कोस पिछाड़ू राख । तू जो गौरा कहै, मेरा प्रण न राखै, तो माता अञ्जनी वीर हनूमान की दुहाई ।।**

विधि—मङ्गलवार के दिन धूप देकर मन्त्र सिद्ध कर लें । आवश्यकता होने पर पढ़कर फूंक मारें या अगरबत्ती से झाड़ें ।

४६ घर बाँधना–**उत्तरा-खण्ड की काली, उत्तर को बाँध, पूरब को बाँध, पच्छिम को बाँध, दक्खिन को बाँध, आगा बाँध, पीछा बाँध, घर के चारों कोने बाँध । मेरी बाँधी न बँधे, तो काली माई की फिरै दुहाई ।।**

विधि—एक छोटा मिट्टी का डबला लेकर उसकी पेंदी (तली) में छोटा छेद करें । फिर उसमें शराब, दूध और गो-मूत्र भरें तथा मन्त्र पढ़ते हुए घर का चक्कर लगावें । चक्कर लगाते समय डबला हाथों में लिए रहें, ताकि उसमें भरा द्रव्य टपकता रहे तथा हर कोने में नीबू रखकर एक बड़ा कीला ठोंक दें । घर के सारे दुःख तथा अभिचार आदि नष्ट होंगे ।

४७ जगह बाँधना—**अरघट आऊँ, मरघट जाऊँ, मरघट बैठ के लड्डू खाऊँ । लोहे की कील, वज्र का ताला, तहाँ बैठा हनुमन्त रखवाला । भूत-प्रेत, जादू-टोना, सबको जेर कर बाँधनेवाला ।**

विधि—जितनी जगह बाँधना हो, मन्त्र पढ़ते हुए चाकू से घेरा खींच दें । उतनी जगह हर प्रकार से सुरक्षित हो जाएगी ।

४८ पेशाब चालू करना—**टोंटिया वीर कहाँ चले, गुरू पठाय तहाँ चले । दुश्मन की टोंटी लगाने चले । टोंटी लगाएँ, रांग में दर्द दें । इतना करके न आय, तो टोंटिया बीर न कहाय, अपनी मां बहिन का दूध हराम करे ।।**

विधि--चमेली के फूल की धूनी देकर १२१ बार जपकर सिद्ध करें। फिर सात कङ्कड़ों पर मन्त्र पढ़कर जिसे पेशाब करते समय मार दिए जाएँगे, उसकी पेशाब चालू रहेगी और जब तक उसकी कमर में लात नहीं मारी जाएगी (साधक के द्वारा), तब तक पेशाब बन्द नहीं होगी।

४६ कोख बाँधना--**आसो मेहतरानी कहाँ चली ? चलती कोख को बांधन चली। कोख बाँधूं, करवाई बाँधूं, पेट का फूल बाँधूं। इत्ते पै गर्भ रहै, तो माता अञ्जनी, आसो मेहतरानी की दुहाई ।।**

विधि--आसो मेहतरानी को दारू का होम देकर १२१ बार जप कर सिद्ध करें। फिर दारू का होम देकर किसी भी फूल पर ७ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को खिला देंगे, उसका मासिक धर्म बन्द हो जाएगा और गर्भ नहीं रहेगा। यह परिवार - नियोजन का अच्छा साधन हो सकता है।

५० कुम्हार का आवा और कड़ाही, चूल्हा आदि बाँधना--**आना बाँधूँ, बाना बाँधूं, बाँधूं तुन्नक ताई। अस्सी कोस का गोला बाँधूँ, बाँधूँ ऐरन कड़ाही। इतनी बाँध के मेरी टेक न राखो, तो माता अञ्जनी की दुहाई ।।**

विधि--महावीर जी के सामने धूप देकर १०८ बार पढ़कर सिद्ध करें। फिर १-२ कङ्कड़ों पर ७ बार पढ़कर जिस चीज को बाँधना हो, उस पर मार दें।

५१ अग्नि-स्तम्भन--**ॐ शङ्कर हर-हर, अग्नि स्तम्भय स्तम्भय ।।**

विधि--इसे ७ बार पढ़कर फूंक मारने से अग्नि - स्तम्भन होता है। मैंने चूल्हे पर प्रयोग किया था। आग तो जलती थी, पर तवा गर्म नहीं होता था और न ही और कुछ गर्म होता था आँच भी महसूस नहीं होती थी। बाद में चूल्हे को लीपकर जलाने पर चूल्हा ठीक-ठीक जलता था। अग्नि - काण्ड आदि में परीक्षा करने का मौका नहीं मिला।

५२ मनुष्य-स्तम्भन--**काली करालो, अमुकं स्तम्भय स्वाहा ।।**

विधि--यह मन्त्र मनुष्य को देखकर, छूकर या ध्यान करते हुए जपने से स्तम्भन होता है। कई बार कई लोगों के समूह से भी सुरक्षित निकला हूँ। एक से अधिक व्यक्ति होने पर '**अमुकं**' पद को

"एतान् सर्वान् या सर्व-जनानाम्" करके जप करें। जो शेर जैसे दहाड़ते आएँगे, वे कुत्ते के समान दुम हिलाते लौट जाएँगे।

५३ निद्राकरण—**ॐ शुद्धे - शुद्धे महा - योगिनि ! महा-निद्रे ! स्वाहा ॥**

विधि—३०० बार अभिमन्त्रित की हुई, गो-मूत्र की भावना दी हुई, श्मशान की मिट्टी रात्रि के आरम्भ में जिस घर में फेंक देंगे, वहाँ शीघ्र ही सभी घोर निद्रा में लीन हो जाएँगे। घर के कुत्ते तक सो जाते हैं।

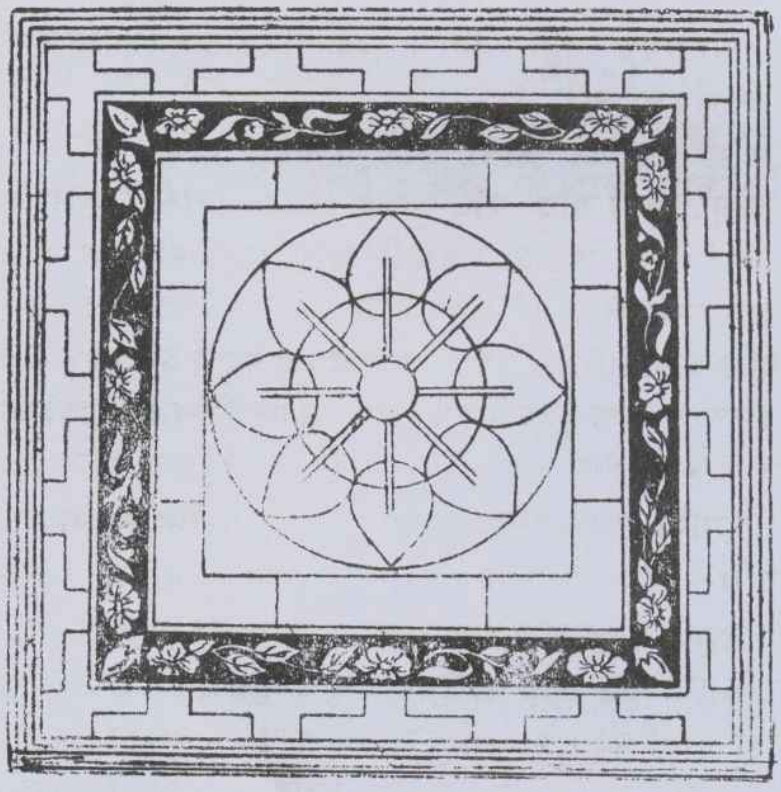

शाबर-मन्त्र-मुक्तावलि-शब्द-कोष

प्रस्तुत-कर्ता--श्री भैरवानन्दनाथ

अध्यक्ष--शाम्भवी तान्त्रिक शोध संस्थान

१०८, चकराघाट, सागर (म० प्र०)-४७०००२

शब्द	अर्थ
(अ) अग्गम	आगे, सामने, पूर्व दिशा
(आ) आंगूं	आगे, सामने
आल	क्यारी, जलाधार, वृक्षों के नीचे पानी रोकने के लिए बना घेरा
(ओ) ओदो	गीली, भीगी हुई
(क) करवाई	कमर, कटि
कुच	स्तन, उरोज, चूची, थन
कुन्द	एक पुष्प-वृक्ष, कमल, मन्द, भौथरा, स्तब्ध
कूख	कोख, गर्भाशय, पेट
(ख) खटोला	पलना, छोटी खटिया
खारुआ (वा)	एक प्रकार का मोटा लाल कपड़ा
(ग) गन	समूह, गण
(घ) घाली	डाल दी, फेंक दी
(च) चौगेटा	चक्कर, चतुर्दिक्
(ज) जायो	जन्म दिया, पैदा किया
जिहै	जिसे, जिन्हें
जी ने	जिसने
(ढ) ढांक बजावे	मटके के मुँह पर थाली रखकर बजाना
(त) तख्त	सिंहासन, तख्ता, श्याम-पट (ब्लैक बोर्ड)
तिहै	उसे, उन्हें
ती की	उसकी, उनकी
तीती	नम, गीली, चरपरी

	तेंई	तू ही, तुम ही
	तोतला	अस्पष्ट-वक्ता, अस्फुट-वाक्
(द)	दम करना	अभिमन्त्रित करना, फूंक मारना
(प)	पच्छम	पीछे, पश्चिम दिशा
	पनही	जूता, पगरखी
	पाँछूं	पीछे
	पाट	एक प्रकार का सन, किनारा
	पायक	प्यादा, पदाति, पैदल चलनेवाला, मल्ल, पहलवान
	पीड़ई	पटरा, पटा, पीढ़ा, मचिया
	पुतरिया	पतली, चित्र, काष्ठादि-निर्मित छोटी मूर्ति
(फ)	फरिया	छोटा लँहगा, घघरिया
	फलाँ	अमुक
(ब)	बलवारो	बलवान, शक्ति-शाली
	बैरनी	शत्रु की स्त्री, बैरन
	बोकरा	बकरा, छाग, अज
(भ)	भख	भोजन, भक्ष्य, खाना
(म)	मच्छी	मछली, चूमा (चुम्बन)
	माची	खटोला, खाट, पलना
	माँझ	मध्य, बीच
	मुरकै	पोछे, लौटे, पलटे, मुड़े
(र)	रकत	रक्त, खून, लहू
	रांग	जाँघ, जानु
(स)	संदल	चन्दन
	सिला	चट्टान, बड़ा पत्थर, पीसने की सिल
	सूजा	सुतारी, बड़ी सुई, वेधी

गुरु गोरखनाथ के शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रकाशनाथ 'तंत्रेश'

संस्थापक–भारतीय प्राच्य विद्या संस्थान

बिचरलो गुजरान मौहल्ला, पोस्ट-ब्यावर (राजस्थान)

भारत-वर्ष की चामत्कारिक विद्याओं में '**शाबर-मन्त्र-विद्या**' प्रमुख है। 'शाबर-मन्त्र' का प्रयोग जीव-जगत् के प्रत्येक क्षेत्र में, जहाँ भी कोई समस्या, लालसा, उद्देश्य अथवा प्रयोजन हो, अपना निश्चित प्रभाव और विचित्र चमत्कार दिखाता है। अनेक वैदिक, पौराणिक और तान्त्रिक मन्त्रों के विद्यमान होते हुए भी शाबर-मन्त्रों के शीघ्र व तात्कालिक प्रभाव से विद्वत्-समाज चमत्कृत है। अधिकांश '**शाबर-मन्त्र**' हिन्दी-भाषा में मिलते हैं, परन्तु अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी ये सहज उपलब्ध हैं।

शाबर-मन्त्रों की रचना आदि-नाथ शिव ने आद्या-शक्ति पार्वती के विशेष निवेदन पर जन-हित की भावना से की थी। इस रचना-परम्परा को परम सिद्ध दादा-गुरु **मत्स्येन्द्रनाथ** तथा उनके शिष्य **गुरु गोरखनाथ** ने विकसित किया। **नाथ-सम्प्रदाय** की परम्परा में गुरु गोरखनाथ सिद्ध योगी एवं चमत्कारी तान्त्रिक के रूप में विश्व-विख्यात हैं। इन्हें आदि-नाथ शिव का अवतार मानते हैं। इनके अतिरिक्त '**नाथ-पन्थ**' के अन्य सिद्धों ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाया। मुस्लिम-सन्तों, जैन-यतियों ने भी अपना योग-दान दिया। इस प्रकार अनेक नाथ-सिद्धों, योगियों, यतियों एवं पीर-पैगम्बरों के नाम शाबर-मन्त्रों के साथ जुड़ते गए।

शाबर-मन्त्रों के प्रवर्तक एवं सिद्धि-दाता बारह आचार्यों के नाम हैं—१ नागार्जुन, २ जड़ भरत, ३ हरिश्चन्द्र, ४ सत्यनाथ, ५ भीम-नाथ, ६ गोरख-नाथ, ७ चर्पट-नाथ, ८ अवघट-नाथ, ९ वैराग्य-नाथ, १० कन्था-धारी, ११ जालन्धर-नाथ और १२ मलयार्जुन-नाथ। यहाँ गुरु गोरखनाथ के कुछ जन-कल्याण-कारी विशिष्ट '**शाबर - मन्त्र**' प्रस्तुत हैं–

गोरख शाबर-गायत्री-मन्त्र

१ ॐ गुरु जी, सत नमः आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐकारे शिव-रूपी, मध्याह्ने हंस-रूपी, सन्ध्यायां साधु-रूपी । हंस, परमहंस—दो अक्षर । गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री । ॐ ब्रह्म, सोऽहं शक्ति. शून्य माता, अवगत पिता, विहङ्गम जात, अभय-पन्थ, सूक्ष्म-वेद, असंख्य शाखा, अनन्त प्रवर, निरञ्जन गोत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग, जल-स्वरूप रुद्र-वर्ण । सर्व-देवः ध्यायते । आए श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ । ॐ सोऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात् । ॐ इतना गोरख-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया । गङ्गा गोदावरी त्र्यम्बक-क्षेत्र कोलाञ्चल अनुपान-शिला पर सिद्धासन बैठ । नव-नाथ, चौरासी सिद्ध, अनन्त-कोटि-सिद्ध-मध्ये श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ जी कथ पढ़, जप के सुनाया । सिद्धो गुरुवरो, आदेश-आदेश ।।

साधन-विधि एवं प्रयोग—प्रतिदिन गोरखनाथ जी की प्रतिमा का पञ्चोपचार से पूजन कर २१, २७, ५१ या १०८ जप करे । नित्य-जप से भगवान् गोरखनाथ की कृपा मिलती है, जिससे साधक और उसका परिवार सदा सुखी रहता है । बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती हैं । सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है और अन्त में परम पद प्राप्त होता है ।

(२) टोना-दूरीकरण शाबर-मन्त्र

ॐ वज्र का कोठा, वज्र में ताला । वज्र में बन्ध्या दस्ते द्वारा, तहाँ वज्र का लग्या किवाड़ा । वज्र में चौखट, वज्र में कील । जहाँ सू आया, तहाँ ही जाय । जाने भेजा जाकूँ खाय, हम कूँ फेर न सूरत दिखाय । हाथ कूँ, नाक कूँ, कान कूँ, सिर कूँ, पीठ कूँ, कमर कूँ, कूँ जो जोखो पहुँचावे, तो श्री गोरखनाथ की आज्ञा फुरे । मेरी भक्ति, छाती गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।।

साधन-विधि एवं प्रयोग—गुरु गोरखनाथ की प्रतिमा के सम्मुख बैठकर उनका पञ्चोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य) से पूजन-कर २१ दिन तक प्रति-दिन १०८ जप कर सिद्ध करे । जप मङ्गलवार

या शनिवार से प्रारम्भ करे। सिद्ध करने के बाद आवश्यकता पड़ने पर सात कुओं का जल एक पात्र में एकत्र करे और उक्त मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर जल को मन्त्रित करे। उस जल से रोगी को स्नान करावे। तीन दिन ऐसा करने से 'टोने' का प्रभाव समाप्त हो जाता है तथा उससे उत्पन्न रोग मिट जाते हैं।

(३) घाव पूरने का शाबर-मन्त्र

ॐ सार-सार त्रिजय-सार, संसार बाँधूँ सात बार। फूटे अङ्ग न उपजे घाव, सीर राखे श्री गोरखनाथ। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। आदेश गुरू को।

साधन-विधि एवं प्रयोग—चोट लग जाने से घाव हो जाता है और कभी-कभी वह भरता नहीं। ऐसी दशा में इस मन्त्र का प्रयोग घाव को शीघ्र भर देता है। पूर्वोक्त (मन्त्र-संख्या २) विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। तब रोगी को सामने बिठाकर सात बार मन्त्र पढ़कर, घाव पर फूँक मारे। यह प्रयोग निरन्तर कुछ दिनों तक करने पर घाव भरना प्रारम्भ हो जाता है और घाव सूखकर ठीक हो जाता है।

(४) श्मशान-बाधा-निवारक शाबर-मन्त्र

सफेदा मसान, गुरू गोरखनाथ की आन। यम-दण्ड मसान, काल-भैरव की आन। सुकिया मसान, लोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरव की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरव की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की जोगिन की आन। कमोदिया मसान, कालका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। मिचमिचिया मसान, शिव शङ्कर की आन। सिलसिलिया बीर मुहमदा पीर की आन।

साधन-विधि एवं प्रयोग—कभी-कभी अशुद्ध जगह (श्मशान आदि में) जाने से अशांत आत्माएँ व्यक्ति को प्रभावित कर लेती हैं। इस मन्त्र को भी पूर्वोक्त विधि से सिद्ध करे। फिर जरूरत पड़ने पर व्याधि-ग्रस्त व्यक्ति को मोर-पङ्ख से सात बार मन्त्र बोलते हुए झाड़ा देने पर श्मशान-बाधा दूर हो जाती है। इस मन्त्र का झाड़ा देते समय अंगारों पर लोबान की धूनी भी देवे।

(५) कखलाई निवारक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो कखलाई भरत लाई, यहाँ बैठा हनुमन्ता आई । पके न फूटे चल वाल । जति रक्षा करे गुरु गोरख बाल । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । सत्य नाम आदेश गुरू को ।

साधन-विधि एवं प्रयोग—कभी-कभी व्यक्ति की काँख (कन्धे के नीचे, जहाँ से भुजा शुरू होती है) में एक दुःखदायी गाँठदार फोड़ा हो जाता है । इसके निवारण हेतु इस मन्त्र का प्रयोग करे, तो लाभ होगा । पूर्वोक्त विधि अनुसार सिद्ध करने के उपरान्त जरूरत पड़ने पर नीम की डाली पत्ती सहित लाकर रोगी को सामने बिठाकर २१ बार मन्त्र बोलते हुए झाड़ा लगाए । यह प्रयोग सुबह और शाम दोनों समय करे । झाड़ा लगाने के बाद भूमि की मिट्टी कखलाई के स्थान पर लगा दे । कुछ दिनों में कखलाई बैठ जाएगी ।

(६) टिड्डी-रक्षक शाबर-मन्त्र

ॐ नमः आदेश कामाक्षा देवी को अज्र बाँधू, वज्र बाँधूं, बाँधूं दशो दुवार । लोहे का कोड़ा हनुमान ठोके, गिरे धरती लागे घाव । सब टिड्डी भस्म हो जाय । बाँधू नाला, ऊपर ठोकूं वज्र का ताला । नीचे भैरो किलकिलाय, ऊपर हनुमान गाजे, हमारी सीव में दाना-पानी खावे, तो गुरू गोरखनाथ लजावे ।

साधन-विधि एवं प्रयोग—इस शाबर-मन्त्र को पूर्वोक्त विधि से होली की रात को १००८ जप कर सिद्ध करे । फिर जब कभी टिड्डी-दल आने की सम्भावना हो, तो एक मुट्ठी चावल लेकर उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर खेत में चारों तरफ फेंक दें । साथ ही इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए खेत के चारों कोनों में चार कीलें गाड़ दें । ऐसा करने पर टिड्डी-दल से खेत-खलिहान की सुरक्षा हो जाती है ।

मेरे नाना जी और उनके पूर्वज इस विद्या में पारङ्गत थे । उन्होंने कई बार अपने गाँव के खेतों को इस विद्या से सुरक्षित किया ।

७ पशु-रोग-निवारक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो कीड़ा रे ! तू कुण्ड-कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुंह काला । मैं तोहि बूझूं कहाँ ते आया, तोड़ि मांस तैं सबकूं खाया । अब तू जाय,

भस्म हो जाय। गुरु गोरखनाथ करे सहाय। शब्द साँचा, पिण्ड फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

साधन-विधि व प्रयोग—पशुओं के शरीर में किसी बीमारी से या घाव होने पर कभी-कभी कीड़े पड़ जाते हैं। इसके निवारण हेतु पूर्वोक्त विधि से मन्त्र को सिद्ध करे। फिर पशु के सामने बैठकर नीम की डाली से सात बार मन्त्र बोलते हुए झाड़ा दे। कुछ ही दिनों में पशु ठीक हो जाएगा।

८ विभिन्न रोग-शामक शाबर-मन्त्र

वन में बैठी वानरी, अञ्जनी जायो हनुमन्त। वाला, डेहरू, बाघिनी, बिलारी, आँख की पीडा, मस्तक-पीड़ा, चौरासी वाय, वलि-वलि भस्म हो जाय। पके न फटे, पीड़ा करे, तो गोरख जति जो रक्षा करे। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

साधन-विधि व प्रयोग—पूर्वोक्त विधि के अनुसार मन्त्र को सिद्ध करे। मन्त्रोक्त रोग से पीड़ित रोगी को सामने बिठाकर छुरी या मोर-पङ्ख से सात बार मन्त्र बोलते हुए झाड़ा लगाए। कुछ दिनों तक करने पर रोग ठीक हो जाएगा।

९ पागल कुत्ते के काटे का शाबर-मन्त्र

ॐ नमो कामरू देश, कामक्षा देवी, जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने पाली कुत्ती। दस काली, दस कावरी, दस पीली, दस लाल। रङ्ग-बिरङ्गी दस खड़ी, दस टोको दे भाल। इनका विष हनुमन्त हरे रक्षा करे गुरु गोरख बाल। सत्य नाम आदेश गुरू को।

साधन-विधि व प्रयोग—उक्त मन्त्र को ग्रहण की रात्रि में सिद्ध करे। आवश्यकता होने पर गोबर के उपले की राख को कुत्ते के काटे स्थान के चारों तरफ सात बार पढ़ते हुए लगा दे। कुछ दिन यह प्रयोग करने से रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

१० डाढ़-पीड़ा-नाशक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो कामरू-देश, कामाक्षा देवी, जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने पाली गाय, नित उठ चरवा वन में जाय। वन में

चरे, सूखा घास खाय। पियके पानी गोबर किया, जामै निप-या कोड़ा। मात सुताला, पूंछ पूंछाला, धड़ पीला, मुँह काला। डाढ़ दाँत गालै, मसूढ़ा गालै। मसूढ़ा करे पीड़ा, तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

११ गर्भ-रक्षक शाबर-मन्त्र

गौरी गण्डा दे गई, ईश्वर दे गया वाचा। महा-देव थापा घर गया हुआ, शब्द यह साँचा। इस त्रिया की चिन्ता मेटो, दस मास। दस मास बाँधूं, बीस पाख बाँधूं। इसका पैर खिसे, तो गुरू गोरख-नाथ की दुहाई फिरे। ईश्वर गौरा दिया ताला, या घट-पिण्ड का गुरू गोरखनाथ रखवाला। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरू को।

साधना-विधि—विभिन्न कारणों से स्त्रियों को सन्तान-सुख प्राप्त नहीं होता। गर्भ नष्ट हो जाता है। ऐसे सङ्कट से मुक्ति पाने के लिए उक्त मन्त्र का प्रयोग करे। पहले मन्त्र को पूर्वोक्त विधि से सिद्ध कर ले। तदुपरान्त स्त्री की पूरी लम्बाई (एड़ी से चोटी तक) के बराबर सूत का धागा लेवे। उसे कुँवारी कन्या के हाथ से छुआ कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर धागे पर सात बच्चों से सात गाँठ लगवाकर स्त्री की कमर में धारण करा दे। इससे गर्भ सुरक्षित रहता है और समय आने पर सन्तान की प्राप्ति होती है। पूरे मास होने पर धागा उतार दे और उसे कुएँ में डाल दे।

१२ भूत-प्रेत-बाधा-नाशक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। मन्त्र साँच, कण्ठ काँच। दुहाई वीर हनुमान की। जो जावे लङ्का जारी, लङ्का मझारी। आन लक्ष्मण वीर की, आन मानेजाके वीर की। दुहाई मेहमदा पीर की। बादशाह जादा, काम में रहे आमदा। दुहाई कालिका माई की। धोला-गिरि वारी, चढ़े सिंह की सवारी, जाके लँगूर है अगारी। प्याला पीवे रक्त का चण्डिका भवानी वेद-वाणी में बखानी। भूत नाचे वेताल नाचै, राखे अपने भक्त की लाजो। मेहरवाली काली, कलकत्ते वाली। हाथ कञ्चन की थाली

लिए ठाड़ी । भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी, सदा सन्तन हितकारी । उतर भूत-राज, जल्दी कर । नहीं तो खाय तोको कालिका माई, उन्हीं की दुहाई, भक्त की सहाई । सारे संसार में माई, तेरी ज्योति रही जाग । पकड़ के, पहाड़ के, मात ! मत अबार कर । तेरे हाथ में कृपाण, भक्षण कर ले जल्दी आय के । जाय नाहीं भूत, पकड़-पकड़ मात ! जाय भूत उतर-उतर-उतर । न उतरे, तो राजा रामचन्द्र की दुहाई । गुरु गोरखनाथ का फन्दा, करेगा तोय अन्धा । फुरो मन्त्र, हुं फट् स्वाहा ।

साधन-विधि—कभी-कभी व्यक्ति भूत-प्रेत-बाधा से ग्रस्त होकर असन्तुलित हो जाता है। भूतोन्माद से ग्रस्त व्यक्ति को अच्छा करने के लिए उक्त मन्त्र को सिद्ध करने की विधि पूर्वोक्त ही है। सिद्ध करने के बाद, आवश्यकता होने पर, रोगी को समाने बिठाकर मोर-पङ्ख से, सात बार मन्त्र बोलते हुए, झाड़ा लगाए या जल को अभिमन्त्रित कर रोगी को पिलाए, तो बाधा दूर हो जाती है। ऐसा कुछ दिनों तक करें।

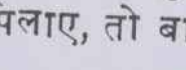

श्री हनुमन्त पंजर

ॐ हनुमन्ते नमः । ॐ महावीर हनुमन्ता । ॐ काला टङ्क हनुमन्ता । ॐ रक्त हनुमन्ता । ॐ चल-चल अञ्जनी-पुत्र ग्रह चल । हाँक देत हँकी कूदि । हनुमन्त लङ्का जारि । पवन-पुत्र ! अञ्जनी-आनन्द-कारी राम-दूत, हनुमन्त ! खं-खं-खं । स्वं षट्-ग्रह हं-हं-हं इङ्कार-भाज-भाजी । शाकिनी-डाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाच बन्ध-बन्ध । वीर हनुमन्त ! ढाल-बन्ध, तलवार-बन्ध, तपुक-बन्ध, नेजा-बन्ध, फरसा-बन्ध, बान-बन्ध, मोहक-बाण-बन्ध, चण्ड-बाण-बन्ध, रथ-बन्ध, पृथवी-बन्ध, आकास-बन्ध, पाताल-बन्ध, फौज-बन्ध, कमर-बन्ध, पत्थर-बन्ध, अग्नि-बन्ध, वीर-बन्ध । हनुमन्त ! न बाँधो, तो माता अञ्जनी की दोहाई । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि—उपर्युक्त मन्त्र का ग्यारह बार पाठ कर राई, लोन, लावान से हवन करे । सभी प्रकार की बाधाएं शान्त होती हैं ।

विविध शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य', ककरा, प्रयाग

१. टोना-टमारी, बच्चों की बीमारी तथा साँप झारने के मन्त्र

ॐ काली-काली-काली ! महा-काली, उठ बैठी पीपर की डारी। दोहाई पुरुष बङ्गाले का।

विधि—उपर्युक्त मन्त्र पढ़े और फूँक कर झारे, साँप के विष का प्रभाव दूर हो जायगा। यदि किसी ने टोना किया होगा या बच्चे को कोई अन्य व्याधि होगी, तो उससे भी छुटकारा मिलेगा।

२ सिर-पीड़ा झारने का मन्त्र

ॐ सोने की सिल, रूपे का लोढ़ा। सीता पीसै जीरा, उतर जाय मूँड़े की पीरा।

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर सिर पर उँगली से रगड़ कर झारे। पीड़ा दूर हो जाएगी।

३ हनुमान रक्षा-शाबर मन्त्र

(क) ॐ गर्जन्तां घोरन्तां, इतनी छिन कहाँ लगाई ? साँझ क बेला, लौंग-सुपारी-पान-फूल—इलायची-धूप-दीप-रोट - लँगोट—फल-फलाहार मो पै माँगै। अञ्जनी-पुत्र ! प्रताप-रक्षा-कारण वेगि चलौ। लोहे की गदा कील, चं चं गटका चक कील, बावन भैरो कील, मरी कील, मसान कील, प्रेत-ब्रह्म-राक्षस कील, दानब कील, नाग कील, साढ़े बारह ताप कील, तिजारी कील, छल कील, छिद कील, डाकनी कील, साकनी कील, दुष्ट कील, मुष्ट कील, तन कील, काल - भैरो कील, मन्त्र कील, कामरू देश के दोनों दरवाजा कील, बावन वीर कील, चौंसठ जोगिनी कील, मारते क हाथ कील, देखते क नयन कील, बोलते क जिह्वा कील, स्वर्ग कील, पाताल कील, पृथ्वी कील, तारा कील। कील बे कील ! नहीं तो अञ्जनी माई की दोहाई फिरती रहे। जो करै वज्र की घात, उलटे वज्र उसी पै परै। छात

फार के मरै। ॐ खं-खं-खं जं-जं-जं वं-वं-वं रं-रं-रं लं-लं-लं टं-टं-टं मं-मं-मं। महा-रुद्राय नमः। अञ्जनी-पुत्राय नमः। हनुमताय नमः। वायु-पुत्राय नमः। राम-दूताय नमः।

विधि--यह मन्त्र एक वैरागी महात्मा द्वारा बताया हुआ है। अनेक बार का अनुभूत 'रक्षा' - मन्त्र है। अत्यन्त लाभ - दायक है। १००० पाठ करने से सिद्ध होता है। अधिक कष्ट हो, तो हनुमान जी का फोटो टाँगकर, ध्यान लगाकर लाल फूल और गूगुल की आहुति दे। लाल लँगोट, फल, मिठाई, ५ लौंग, ५ इलायची, १ सुपारी चढ़ा कर पाठ करे। पूरा लाभ होगा।

४. दो बाल-रक्षा मन्त्र

(१) **ॐ नमो महा-वीर, हनुमन्त वीर, शूर - वीर। धाय - धाय चलो। वीर मूठ मारि चलावो तीर। मुक्का मार करेजा फार दो। दोहाई भगवान् की, जय बजरङ्ग बली की।**

(२) **ॐ नमो याशा असरफ सबजा निशान, गुरु-ज्ञान के बदले से जादू किहा तमाम। नान्हक हुए हैं जब से मुरशत कलप से जान। उरदी किचे मसान से कहते हैं, राम राम! हनुमत का दुम लपेट दे, भैरो का कान बाँध। जिन्नात वीर देव के खिजमत मदे मुदाम मुन्दरा को बन्द किया वस भागा। नान्हक बड़े मुछन्दर, गोरख में क्या सकस। रख दिया सुरुवाँ को आसुन्दर, अरजुन बरान पांडे का हाथ। बुत-परस्त मारे जबर ठोकर, जावे जमीन में धँस। ऐसा जरब लगाइए कि बाजे धमस। राम का बान, लक्षमन सीता का बान ध्यान। तीर बाँध, कमान बाँध। दोहाई गुरु गोरखनाथ की।**

विधि—उक्त दोनों मन्त्र १०८ वर्षीय वयोवृद्ध बाबा केशवानन्द गोसाईं, रावलपिण्डी (पञ्जाब) के बताए हैं, इन मन्त्रों का पाठ करने से बालकों की रक्षा होती है।

५. पञ्जाबी भाषा में अन्न-पूरना देवी का सिद्ध मन्त्र

ॐ सत्त नाम का सभी पसारा, धरन गगन में जो वर तारा। मन की जाय जहाँ लग आखा, तहँ-तहँ सत्त नाम की राखा। अन्नपूरना पास गई बैठाली, थुड़ो गई खुसाली। चिनत मनो कलप तराये, काम-

धेनु को साथ लियाये । आया आप कुबेर भण्डारी, साथ लक्ष्मी आज्ञा-कारी । सत गुरु पूरन किया सवारथ, विच आ बइठे पाँच पदारथ । राखा ब्रह्मा-विशुन-महेश-काली-भैरव-हनू-गनेस, सिध चोरासी अरु नवनाथ बावन वीर जती चौसाठ । धाकन गमन पिरथवी का वासग, रहे अम्बोल न डोले आसन । राखा हुआ आप निरङ्कार, थुड़ी भाग गई समुन्दरो पार । अतुत भण्डार, अखुत अपार, खात-खरचत कुछ होय न ऊना, देय देवाये दूना चौना । गुरु को झोली मेरे हाथ, गुरु बचनी बंधे पँच तात । वेअण्ट-बेअण्ट भण्डार, जिनकी पैज रखी करतार । मन्तर पूरना जी का संपूरन भया । बाबा नानक जी का गुरु के चरन-कमल को नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते ।

विधि—उपर्युक्त पञ्जाबी भाषा के सिद्ध मन्त्र को ११ बार प्रति-दिन जप करे । १ हजार जप हो जाने पर किसी प्रकार की कमी नहीं होती ।

६. माहेश्वर धूप

विधि—गुरुखुल, गोरख-मुण्डी, बिनौला, कड़वा वच, नीम-पत्ती, हींग, पीली सरसों, साँप की केंचुल—सब १-१ छटाँक । हींग केवल आधा तोला रहेगी । गो-मूत्र से पीसकर, छाया-शुष्क कर फिर पीसे । १ पोटली में रखकर बालक को सुंघावे और चारपाई के नीचे धूप दे । हर तरह की पूतना, टोना-टमानी, बाल-ग्रह दूर हो । विन्ध्याचल भैरो-कुण्ड से प्राप्त यह विधि बड़ी फल-दायक है ।

७. सर्व-कामना-पूरण मन्त्र

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ! कर चर लव संगे तेज समान ।

विधि—सङ्कल्प कर, एक लाख का पुरश्चरण करे । चाहे जो कामना हो, पूर्ण हो । गो-घृत से दशांश हवन पूर्व-मुख होकर करे । पुरश्चरण-काल में भोजन—जौ की दलिया, गौ-दुग्ध में खीर बनाकर खाए । पूजा-काल का वस्त्र पूजा के ही समय पहने, अन्य समय नहीं ।

८. बाबा नीलकण्ठ (मैहर) का विधान

कलुई कलुई कलुई राति मैं किलकारौं, आधो रात कालू बीर आवै । कालू बीर जाय धं कलेज (शत्रु-नाम) की खाय । दोहाई काल भैरो की, दोहाई नारसिंह भैरो की । दोहाई नारसिंह भैरो की ।

विधि—९ दिन तक १ माला प्रतिदिन जप करे। माला १०८ रुद्राक्ष की हो। १ छटाँक लोहवान से नित्य हवन करे। इसी मन्त्र से नित्य एक नीबू की बलि दे। १ चिलम गाँजा रोज दे। घी-गुड का १ बार हवन करे। सामान्य कार्य के लिए ७ दिन तक प्रयोग करे। पूर्ण कार्य हेतु ९ दिन प्रयोग करे।

९. कार्य-सिद्धि हेतु शाबर-मन्त्र

जय अम्बा भू की रानी, काली माता कालका, काला भैरो है मतवाला, हनुमान चिल्लेवाला। मेरा कार्य ना सहारो, तो दोहाई है गुरु गोरखनाथ की। अञ्जनी का पुत्र हनुमान साजै।

विधि—नित्य जप करे, तो रुका काम पूरा हो। ज्यादा जरूरी हो, तो १०८ वार जप करे।

१०. शारदा माता का मन्त्र

साता पुनि शारदा, बारह बरस कुआर। एको देवी पूजिये, ग्यारह रुद्रि शिव अष्ट-भुजी परमेश्वरी। एक पुरुष भगवान, खट दरशन को सेविये तीनों भय सुजान। पञ्च आत्मा बस कर सत धर्म की बात, चतुर्योगी नव खण्ड चन्द्र सूर्य दो साथ।

विधि—नित्य १ वार कम-से-कम जपे, अधिक कामना के लिए १०८ जप करे। माँ शारदा की कृपा होती है।

११. हर प्रकार के सङ्कट का बन्धन-कारक मन्त्र

ॐ बाबा बनखण्डी साहेब जी मात्रा। ॐ बाबा बनखण्डी बन के राय, चोर ना मूसे, बाघ ना खाए॥ अमरा किला अमर के खाए, पेट फाड़ बाघ मरि जाए॥ छिन्न दाहिने छिन्न छिन्न आगे होय, अचल गोसाईं सुमिरिए काया विघन ना होय॥ ए बन छोड़ि दूजे बन जाओ॥ सूजा साबर मार बन खाओ॥ हाथ हनुमन्ते मेहर कर॥ भैंसा की थान बाँधों, भील बाँधों, भीलनी बाँधों, भूत बाँधों॥ प्रेत बाँधों॥ किन्नर बाँधों॥ डाकिनी बाँधों, साकिनी बाँधों॥ हाथी के दाँत बाँधों, घोड़ा की पीठ बाँधों, एक कोस बाँधों, २ कोस बाँधों, ४ कोस बाँधों, छ कोस बाँधों, छ दूनी बारह कोस बाँधों, बारह दूनी चौबीस कोस बाँधों। जैसे राजा रामचन्द्र जी सेत बाँधे, नरसिंह छूटे, महन्थ मोहनदासजी बनखण्डी साहेब के चरणों, नमस्ते नमस्ते॥

विधि—गूगुल, गाय का घी व हवन-सामग्री मिला कर रखे। हर दोहरी लकीर (॥) जब पढ़ने समय आवे, हवन करता जाय। सब विपदा का बन्धन होवे। यह विधि सिद्ध बाबा वनखण्डी की है। इसे मैहर-वासी बाबा नीलकण्ठ ने दिया है।

१२. भूत-प्रेत-निवारक कामरूप जादू

बाँधो कि रानी कि सिंह बुढ़ानी कि ध्यान धरे शिव को जपती हो, सङ्कट में हम तोहि पुकारत बेर भई जगदम्ब विलम्ब कहाँ करती हो? नव कोटि में तुही भवानी, तीन लोक में डङ्का बाजै। महिमा अमित न जात बखानी। लगूर वीर गहे अगवानी। जय जय जगदम्ब भवानी, अन्नपूरना हे जग-पालो, महिषासुर को मारि गिराया रक्त-बीज का किया संहारा। जय हंकार-मती, संहार-मती, पहाड़ी देव, जिरिया बङ्गालिन, बुद्ध उस्ताद, बङ्गाले की जादू, एक कड़ी जादू की छोड़, बङ्गाले की जबान पर बैठ। खोल पलक, देख दुनिया की झलक। नीचे पृथ्वी, ऊपर आसमान। पञ्च परमेश्वर एक समान। दोहाई कामरू की देवी की, दोहाई इसमाइल जोगी, जिरिया बङ्गालिनि, नैना जोगिनी, लोना चमारिन की।

१३. मुद्राकर्षण शाबर मन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमुद्रिकाया चली-चली द्रव्य आकर्षय-आकर्षय। नहीं चलै, तो उकलाभेक्षा की आन, वीर हनुमत की आन, विद्याधर गन्धर्व की आन। ॐ आं ह्रीं ऐं क्रों फट् स्वाहा।

विधि—एक हजार मन्त्र जपे। उड़द-शहद मिलाकर १०८ बार 'चिता' में हवन करे, तब सिद्ध होगा।

१४. विवाहार्थ शाबर मन्त्र

मखनो हाथी जर्व अम्बारी, उस पर बैठो कमाल खाँ की सवारी। कमाल खाँ, कमाल खां मुगल पठान, बैठे चबूतरे, पढ़े कुरान। हजार काम दुनिया का करे। जा, एक काम मेरा कर। न करें, तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दोहाई।

विधि—अधिक उम्र की विवाहार्थ लड़की शुक्ल-पक्ष के प्रथम गुरुवार से, कमल-गट्टे की माला से १० माला, पश्चिम मुँह कर,

२१ दिन जप करे। प्रयोग हेतु सूती कपड़े का आसन, गुलाब की अगरबत्ती का प्रयोग करे।

१५. डाइन भगाने का मन्त्र

शुक्र शनिश्चर मङ्गलवार, तू क्यों आया हमारे द्वार ? कोश की लशढ़ी, गद्दा की छनानि छावो, माया धेरिया को छानो दसो दुवार। गरे परी वा डाइनिया की काटे लहर पटोर। जौने काठ का बोकला, उसी काठ में लगावो। दोहाई बंगाले की डाइनि की।

१६. भूत-प्रेत-शैतान भगाने का मन्त्र

जल बाँधो, जलाहल बाँधो, बांधो जल की काई। भूत-प्रेत-शैतान बांधो, हनुमान की दोहाई।

विधि—उपर्युक्त दोनों मन्त्रों की विधि यह है कि मन्त्र का जप करहवन करे। रक्षा होती है।

१७. नजर झारने का मन्त्र

लाली गाय के पेटे बाछा, बाछा के पेटे छप्पन छूरी। टोना टमानी अरबल-वरवल गोला बाघ, हन्निइयाँ बाघिन, गदह लोट, पनियौना नारसिंही। टोना जौने घाट की लकड़ी, उही घाट जाए। जौने काम वरे आये, सिध होम जाइ। दोहाई गौरा पारवती, दोहाई महा-देव, लोना चमारिन को। मन्त्र महावीर का, फूंक हमारी।

१८. पसली चलने/बच्चों के रोने का मन्त्र

हे बढ़ई की बिटिया, तोर बाप कहां गए ? केदरी के बन में। का करै ? जहर बुझाई छूरो आनै। का होये ? विष झारै, वायू झारै, बतास झारै, पलई झारै, विष निरविष कर देय। दोहाई गौरा पारवती, महा-देव, लोना चमारिन को। मन्त्र महावीर का, फूंक हमारी।

१९. बतास झारने का मन्त्र

(१) ॐ जाल चले, जंजाल चले, सितली बयार चले। दोहाई गौरा पारवती, महा-देव, लोना चमारिन की। मन्त्र महावीर का, फूंक हमारी।

झारने की विधि—पतले बाँस की छड़ी की खड़ी फट्टी बीच से फाड़ ले। दोनों फट्टी का एक कोना, बतास वाले घुटनों के बीच हाथ से थामे रहे, दूसरा कोना दूसरे घुटने के बीच रहे। चिउंटारी की मिट्टी से उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर फूंकता जाए। ११ बार रविवार, मङ्गलवार पढ़े।

(२) **ॐ समुद्र के किनारे गदही-गदहा, खोपड़ा पेड़ा, दौड़ो आप सोच चलु। दोहाई महा-देव की।**

झारने की विधि—रविवार या मङ्गलवार को राख से हाथ या पैर जहाँ बतास हो, वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंकता जाए।

२०. बिच्छू झारने का मन्त्र

ॐ गूरसती-गुरसती-गुरसती, बिना गुरू होव जाव न करी। ६ लाली ६ पीली ६ घूघू घंटा ठारो ६ लसी कदम की डारी। रोवत आवे, हंसत जाए। मोरे झारे दर न पिराए। दोहाई गौरा पारवती, महा-देव, लोना चमारिन की।

झारने की विधि—उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर मिट्टी से झारे।

२१. वायु-गोला झारने का मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्यां

विधि—एक हरे बाँस का दो अंगुल लम्बा-चौड़ा टुकड़ा छील ले। उस पर बैर की लकड़ी की जलती तिनगी रखे। फिर पेट पर ८ अंगुल का सफेद कपड़ा भिगोकर, बाईं तरफ वायु-गोला पर रक्खे, उस पर उक्त बाँस का टुकड़ा और उसके ऊपर बैर की जलती हुई तिनगी रक्खे। कच्चे केले की १ छीमी मन्त्र पढ़कर छोटे टुकड़ों में काटे। १० बार में ही रोगी को ज्ञान होगा कि कलेजा कटता जा रहा है। रुक-रुक कर २५-३० बार, रविवार या मङ्गलवार को इस प्रकार झारे। वायु गोला (बरवट) के स्थान पर फफोला पड़ जाएगा, उसमें देशी घी लगावे।

२२. कुत्ता झारने का मन्त्र

ॐ वासुदेवाय नमो नमः, विष झारन मन्त्र, कूकुर रक्ष।

झारने की विधि—शनिवार, रविवार, मङ्गलवार को कुम्हार के चाक की मिट्टी लेकर कुत्ता काटने की जगह स्पर्श कर झारे। जिस रङ्ग का कुत्ता होगा, उस रङ्ग का बाल मिट्टी में निकलेगा। सात बार झारने के बाद, मिट्टी की सात गोली बनाकर, पीपल-वृक्ष पर रोगी चढ़ावे। पीपल-वृक्ष में कच्चा सूत लपेट कर परिक्रमा करे। एक सीधा ब्राह्मण को दे।

मन्त्र-सिद्ध करने की विधि—नजर झारने, पसली चलने, बतास झारने, बिच्छू-झारने, वायु-गोला झारने, कुत्ता झारने के उपर्युक्त मन्त्रों के लिए पुरश्चरण करने की आवश्यकता नहीं है। केवल प्रति अमावास्या को पाँच बार पढ़कर, गूगुल की आहुति देनी चाहिए। फिर समय पर काम लेना चाहिए।

हनुमान जी का शाबर मन्त्र

भौतिक पर-कृत प्रयोग, बाधा, नजरादि दूर करने के लिए

'ॐ ह्रीं ब्रीं बिकट। वीर हनुमन्त। वीर मन्त्र को मारो, उलट दो पाताल, काल - जाल संघारो। जो धन जहाँ से आवे, वहीं को जाय। टोनहिन का टोना, ओझा को दण्ड। द्रोही शत्रु को मारो। न मारो, तो माता अञ्जनी के बत्तीस धार का दूध हराम करो। सीता के सिर चोट पड़े, हुं फट् स्वाहा ।।

विधि—दिवाली, होली, ग्रहण या नवरात्र में यथा-शक्ति धूप-दीपादि से हनुमान जी का पूजन कर उक्त मन्त्र को जप कर सिद्ध कर ले। बाधा-रोग-ग्रस्त व्यक्ति को सामने बैठाकर हाथ में पीली सरसों ले। मन्त्र पढ़-पढ़कर नौ या ग्यारह बार झाड़ दे। पीली सरसों हाथ में ले, मन्त्र पढ़ सरसों पर फूंक मार कर रोगी पर फेंके। विना सिद्ध किए भी मन्त्र काम करेगा, किन्तु सिद्ध कर लेने से मन्त्र में विशेष शक्ति आ जाएगी।

—पण्डित कपिलनारायण मिश्र, गड़हनी, भोजपुर (बिहार)

उपयोगी

शाबर-मन्त्र

('मन्त्र-महार्णव' से उद्धृत)

वशीकरण-प्रयोग

ॐ आदेश गुरू को। कामरू देश, कामाक्षा देवी। तहाँ बैठे इसमाइल जोगी। इसमाइल जोगी के अङ्ग में फूल किवाडी, फूल चुन लावै लोना चमारिन। फूल चल, फूल बिगसे। फूल पर बोर पर सिंह बसे, जो नहीं फूल का विष। कबहु न छोड़े मेरी आस। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

विधि--उपर्युक्त मन्त्र किसी फूल पर पढ़कर किसी को दे, तो वह वशीभूत होता है।

गर्भ-स्तम्भन प्रयोग

(१) **ॐ वज्र-योगिनी वज्र - किवाड़, वजरी बाँधूँ दसूँ दुवार। झाड़े झड़ै न लिङ्गी करै, तो वज्र-योगिनी का वाचा फुरै।**

(२) **ॐ नमो आदेस गुरू को। चार घाटी, चार वटी। रक्त चुवै चौरासो घाटी। रक्त चुवै भील धीर थाँभ-थाँभ। हनुमन्त वीर, लङ्का - सा कोट, समुन्दर-सी खाई। इस वारी के रक्त चुवै, तो सोषिया वीर की दुहाई। लोना चमारिन की दुहाई। अजैपाल जोगी की दोहाई।**

विधि--किसी कुमारी कन्या द्वारा काता हुआ ढाई पिण्डी सूत लेकर, उसका डोरा बनावे। फिर उक्त मन्त्र पढ़कर डोरे को ७ बार गाँठ देकर, गर्भवती स्त्री की कमर में बाँधे। गर्भ-पात रुक जाता है।

अनावृष्टि प्रयोग

ॐ काली काली स्वाहा।

विधि--पीपल की लकड़ी एवं घृत द्वारा उक्त मन्त्र से १००० बार हवन करने से वृष्टि होती है।

बिक्री-वर्धक प्रयोग

भँवर वीर तू चेला मेरा। खोल दुकान, कहा कर मेरा। उठ जो डण्डी बिकै। जो माल भँवर वीर सोखे नहि जाए।

विधि--तीन रविवार को काली उड़द हाथ में लेकर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर दूकान में डाल दे। बिक्री में आशा से अधिक वृद्धि होगी।

भूत-प्रेत-बाधा-निवारक प्रयोग

(१) **ॐ नमो भगवते नारसिंहाय, घोर-रौद्र-महिषासुर-रूपाय, त्रैलोक्य - आडम्बराय, रौद्र - क्षेत्रपालाय, ह्रौं - ह्रौं क्रीं-क्रीं-क्रोमिति, ताडय ताडय-ताडय, मोहय - मोहय, द्रम्भि - द्रम्भि, क्षोभय - क्षोभय, आभि-आभि, साधय - साधय, ह्रीं हृदये, आं शक्तये, प्रीति - ललाटे बन्धय - बन्धय, ह्रीं हृदये स्तम्भय - स्तम्भय, किलि - किलि हूँ, ह्रीं डाकिनि प्रच्छादय - प्रच्छादय, शाकिनीं प्रच्छादय - प्रच्छादय, भूतं प्रच्छादय - प्रच्छादय, प्रभूतं प्रच्छादय - प्रच्छादय स्वाहा। राक्षसं प्रच्छादय-प्रच्छादय, ब्रह्म-राक्षसं प्रच्छादय - प्रच्छादय, सिंहिनी - पुत्रं प्रच्छादय-प्रच्छादय, डाकिनी-ग्रहं साधय-साधय, शाकिनी-ग्रहं साधय-साधय। अनेन मन्त्रेण डाकिना-शाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाचाद्येकाहिक-द्व्याहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक-पञ्च-वातिक-पैत्तिक-श्लेष्मिक - सन्निपात-केसार-डाकिनी ग्रहादीन् मुञ्च-मुञ्च स्वाहा। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि--लोहे की सलाई अथवा छप्पर की तीली से २१ बार उक्त मन्त्र पढकर झारने से सभी प्रकार की भूत-बाधा, उन्मादादि दूर होता है।

(२) **ॐ काला - भैरो, कपिली जटा। रात - दिन खेलै, चौपटा। काला भैरूँ, भस्म मुसाण। जेहि माँगूँ, सो पकड़ी आन। डाकिनी शङ्खिनी परसिहारी, जराव चढन्ती गोरखमारी। छोड़ि - छोड़ि रे पापिणी, बालक पराया। गोरखनाथ का परवाना आया।**

विधि—उपर्युक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को बालक को पिलाने से बालक सभी डाकिनी-बाधाओं से मुक्त हो जाता है।

(३) ॐ नमो आदेश गुरू को। डाकिनी सिहारी किले मारी, जती हनुमन्त ने। मारी कहाँ जाए, दबकी किन देखी, जती हनुमन्त ने देखी, सातवें पाताल गई। सातवें पाताल सूं कौन पकड़ ल्याया, जती हनुमन्त पकड़ ल्याया। एक ताल दे, एक कोठा तोड्या। दो ताल दे, दो कोठा तोड्या। चार ताल दे, चार कोठा तोड्या। पाँच ताल दे, पाँच कोठा तोड्या। तीन ताल दे, तीन कोठा तोड्या। छः ताल दे, छः कोठा तोड्या। सात ताल दे, सातवीं कोठी खोल देखै, तो कौन खड़ो छे? डाकिनी-सिहारी, भूत-प्रेत चलै, जती हनुमन्त सेरे झाड़े सुं चलै। ॐ नमो आदेश गुरू को। गुरू को शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—मोर-पङ्ख अथवा लोहे की सलाई से झाड़ने से सभी प्रकार के उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(४) ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरू को। ॐ नमो नजर, जहाँ पर-पीर न जानी। बोलै छल सों अमृत - वानी। कहो नजर, कहाँ ते आई? यहाँ की ठौर, तेहि कौन बताई? कौन जात तेरो? कहाँ ठाम? किसकी बेटी? कहाँ तेरो नाम? कहाँ से उड़ी? कहाँ कों जाया? अब हो बस कर ले, तेरी माया। मेरी जात, सुनो चित्त लाए। जैसी होए, सुनाऊँ आए। तेलन, तमोलन, चूहडी, चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के सिर पड़ै। जाहर पीर न जर, सो रक्षा करै। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—मोर - पङ्ख से उक्त मन्त्र को पढ़कर झारने से लाभ होता है।

(५) ॐ सीस राखै सांइया, श्रवण सिरजन-हार। नैन राखे नरहरि, नासा अपरग पार। मुख राखा माधवे, कण्ठ राखा करतार। हृदये हरि रक्षा करे, नाभि त्रिभुवन सार। जंघा राखा जगदीश, करे पिण्डी पालन हार। सिर राखा गोविन्द, पगतली परम उदार। आगे राखे राम जी, पीछे रावण हार। वाम-दाहिणे राखिले, कर गृही करतार। जम डङ्क लागे नहीं, विघ्न काल ते दूर। राम रक्षा जन की करे। बाजे अनहद तूर। कलेजो राखे केसवो, जिभ्या कूं जगदीश। आतम

कं अलख राखे, जीव को जोतिश। राख-राख सरनागति, जीव कूं ऐके बार। सन्तो की रक्षा करे, शिव गुरु गोरखनाथ सत - गुरू सृजन-हार।

विधि--उक्त मन्त्र का नित्य २१ बार पाठ करने से सर्व प्रकार की रक्षा होती है।

उत्तम विवाह हेतु प्रयोग

ॐ गौरी आवे। शिव जो ब्यावे। अमुक (… …) को विवाह तुरन्त सिद्ध करे। देर न करे। जो देर होए, तो शिव को त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै।

विधि–शुभ दिन मिट्टी की एक नई हँडिया लाए। उसमें एक लाल वस्त्र, सात काली मिर्च एवं सात नमक को साबुत किंकिणी रक्खे। हँडिया का मुँह कपड़े से बाँध दे। हँडिया के बाहर कुंकुम की सात बिन्दिया लगाए। फिर उक्त मन्त्र का ५ माला जप करे। जप के बाद हंडिया चौराहे पर रखवा दे। इससे विवाह की समस्त बाधाएँ दूर हो जाती हैं और उत्तम विवाह होता है।

पेट का शूल, आँव, खून बन्द करने का मन्त्र

सागरेर कूले, उपजिलो सूल ओर पीवो-पीवो पानी। (अमुकेर) घुचिलाम रक्त शूल छाड़ानि, धर्मेर आज्ञा।

विधि-जल पर आठ वार इस मन्त्र को पढ़कर रोगी को पिलावे 'अमुकेर' की जगह रोगी का नाम ले।

कान का दर्द दूर करने का मन्त्र

आसमीन नगोर वन्ही कर्म न जायते, दोहाई महावीर की। जो रहे कान पीर। अञ्जनी-पुत्र कुमारी, वायु-पुत्र महा-बल को मारो। ब्रह्मचारि हनुमन्तई नमो - नमो। दोहाई महावीर की, जो पीर मुण्ड की।

विधि—इस मन्त्र को पढ़कर, कान तथा माथे पर फूँक मारे।

बाई झारने का मन्त्र

ॐ नमः धुक्षतनः जहि-जहि, वांक्षतनः प्रकीर्णाङ्ग प्रस्तार-प्रस्तार, मुञ्च-मुञ्च।

विधि—रविवार या मङ्गलवार को कपोत के पङ्ख से झारे, तो बाई दूर हो।

कुत्ता काटे, उसका विष दूर करने का मन्त्र

ॐ हसन हँसानो, कूकुर पलानो। खाट में लोटे। बाट में भूँकै, आउ-आउ सिद्ध यती। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—यह मन्त्र दिवाली की रात में या सूर्य अथवा चन्द्र-ग्रहण के समय, धूप सुलगा कर, केवल सात बार जपे, तो सिद्ध हो जाता है। फिर रविवार या मङ्गलवार के दिन कोरी सींक से झारे।

दाँतों का दर्द दूर करने का मन्त्र

दाँतों के दर्द से कभी-कभी दिन को चैन, रात की नींद गायब हो जाती है। ऐसे समय जिन्हें निम्न मन्त्र सिद्ध हो, वे दुखी व्यक्ति की पीड़ा शान्त कर, पुण्य का अर्जन कर सकते हैं। मन्त्र सीधा-सादा इस प्रकार है—

अग्नि बाँधौं। अग्नीश्वर बाँधौं। सो खाल विकराल बाँधौं। बज्र की निहाय, बज्र-धन दाँत पिराय, तौ पिराय महादेव की आन।

विधि—'मन्त्र' का प्रयोग करने के पहले, दिवाली की रात में या फिर सूर्य अथवा चन्द्र-ग्रहण के समय, धूप सुलगाकर रात्रि भर अथवा ग्रहण-पर्यन्त 'मन्त्र' का 'जप' कर सिद्ध कर ले।

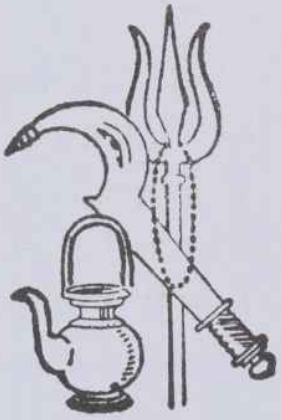

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६